जैन तीर्थवंदना

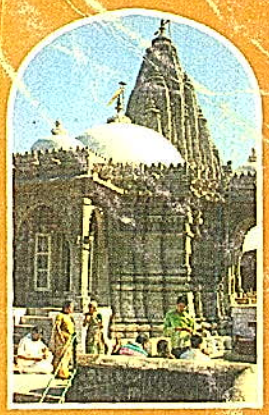

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 6 ISSUE : 6 MUMBAI, DECEMBER 2015 PAGES : 36 PRICE :₹25

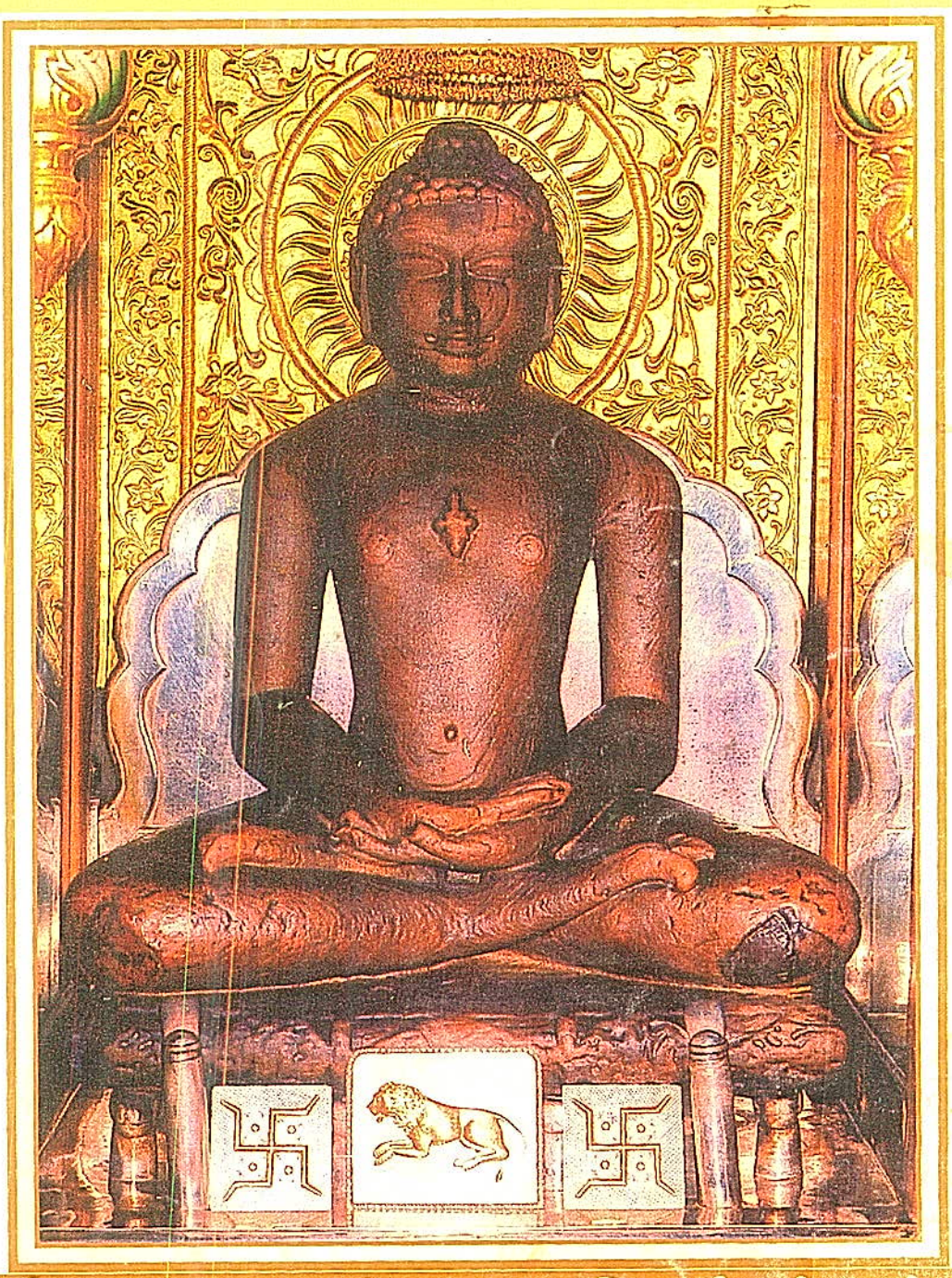

तीर्थंकर श्री १००८ महावीर भगवान, अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

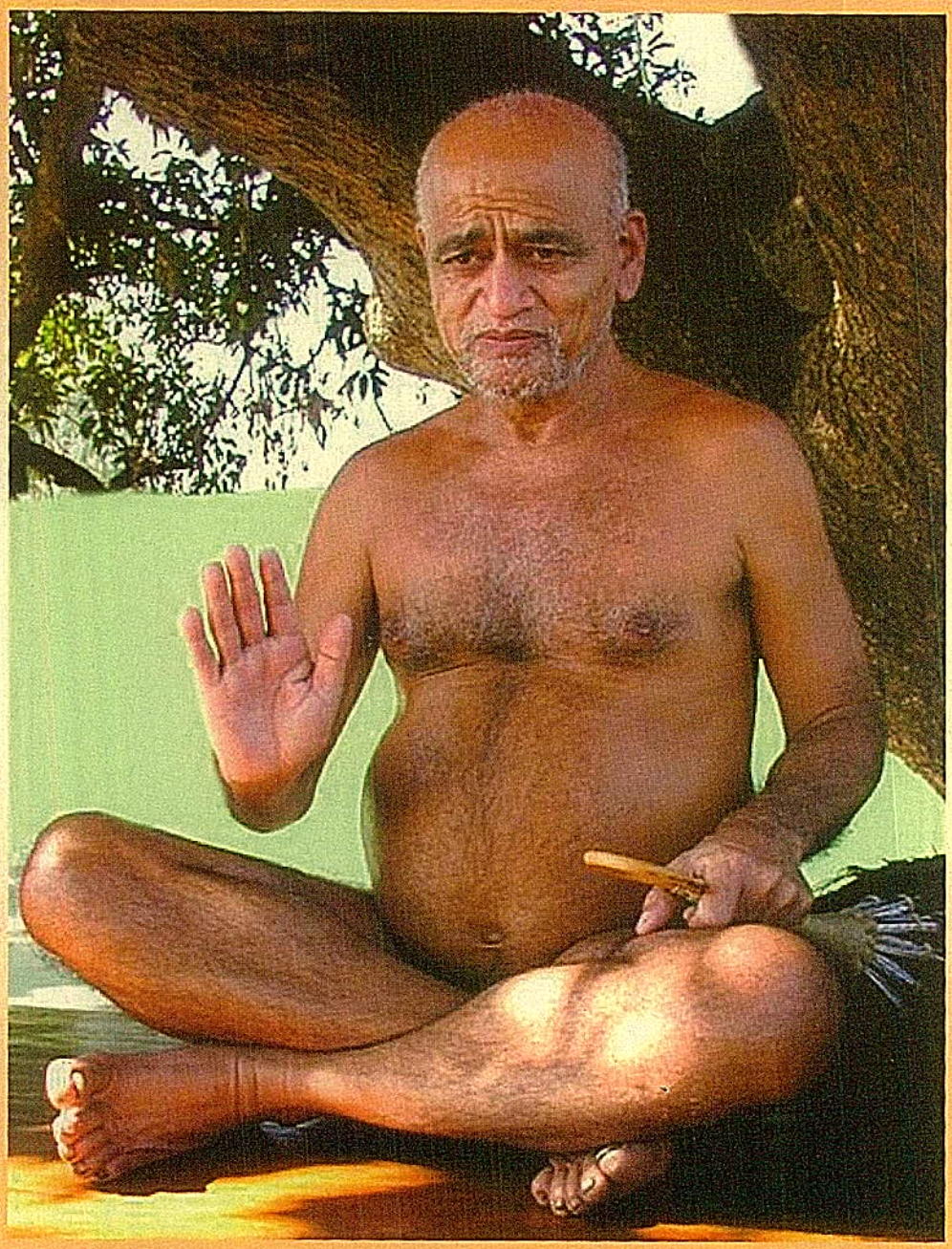

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय भाईयों एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

प्रति माह तीर्थ वंदना की प्रस्तुतीकरण हेतु मुझे आपके ढेरों पत्र-संदेश, बधाई-सुझाव के साथ प्राप्त हो रहे हैं। बहुत बड़ी संख्या में आपके प्रोत्साहन से भरे शब्द हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं। वहीं कुछ लोगों की कटु आलोचना के पत्र हमें समय-समय पर सचेत भी कर रहे हैं। मैं एवं हमारा तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारी-परिवार आपको आभार प्रेषित करता है।

समाज के कुछ विद्वानों ने अपनी भावना व्यक्त की है कि वर्तमान में हो रहे कार्य सम्मेदशिखर जी पर्वत के कार्य, समाज के सभी [illegible]कों को साथ लेकर चलने के कार्य, तीर्थक्षेत्रों पर चल रहे मुकदमों के प्रति प्रतिबद्धता एवं जैन समाज में शिक्षा संस्कारों के प्रति विशेष जागरुकता के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष, मंत्रियों एवं चेयरमैनों की आत्मीय प्रशंसा की है। यह भी लिखा है कि हम झूठी प्रशंसा, वाहवाही एवं दिखावे से दूर ठोस कार्यों के प्रति निष्ठा से कार्यशील हैं। वहीं इन विद्वानों ने हमारा ध्यान सामाजिक कुरीतियों-बुराइयों की ओर भी खींचा है कि जैन समाज कालांतर में बहुसंख्यक से अल्पसंख्यक और अल्पसंख्यकों में भी अल्प रह गया है।

किसी ने यह भी सुझाव दिया है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश की, दिगम्बर जैनों की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है और उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते मुझे- सभी आचार्यों से विचार-विमर्श कर 'मुनिचर्या-श्रमणचर्या' की सर्वमान्य 'आचरण संहिता' बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए, जिसमें दिगम्बर आमना के सभी आचार्य एवं उनके शिष्य एक मंच पर विराजित होकर धर्म की प्रभावना करें। तीर्थों की रक्षा हेतु 'जैनों' को एक सूत्र में बांध सकें।

मैं अल्पज्ञ, आप विद्वतवर्ग से करबद्ध निवेदन करता हूं कि यह दायित्व तो जैन दर्शन के ज्ञाता, विद्वतवर्ग का है, चिंतकों का है, श्रावकाचार एवं मूलाचार के मर्मज्ञों का है न कि हम जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं-सेवकों का।

मैं आपके विचारों से सहमत हूँ कि वर्तमान में देश के अधिकांश जैन बंधु -जैन कुल में जन्म लेने के कारण जैन हैं। जिन धर्म के मूल तीन सिद्धांतों- (1) रात्रि भोजन त्याग (2) पानी छानकर पीना (3) देव दर्शन (प्रतिदिन) से दूर है। अहिंसा की पालना में तर्कहीन कार्यों में लिप्त हैं। समाज में कुरीतियों का बोलबाला प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सामाजिक पंचायतों के पंचों का समाज की रीतियों पर अब अंकुश नहीं रहा। पाणिग्रहण-विवाह जैसे धार्मिक संस्कार के कार्य-भोगवादी विचारधारा में बहकर- रात्रि के आयोजनों एवं होटलों की दूषित वर्गणाओं की ओर अनर्थ को प्राप्त हो रहे हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी एवं आने वाली अबोध पीढ़ी 'धर्म विरुद्ध' संस्कारों की कुरीतियों में पल-बढ़ रही है।

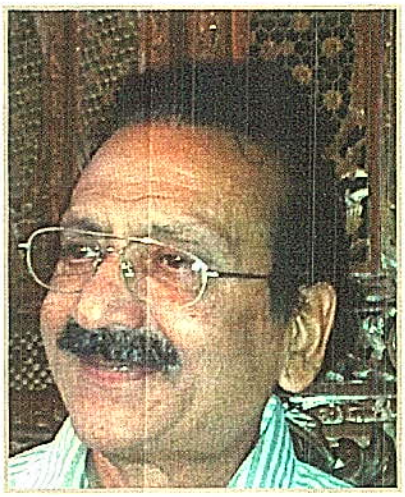

मैं इस बात से भी सहमत हूं कि हम अपने बच्चों को स्कूल भेजकर भूल रहे हैं कि वहां पढ़ने वाले बच्चे अपने मांसाहारी टिफिन बॉक्स हमारे शाकाहारी बच्चों के साथ शेयर करते हैं और हम अनभिज्ञ हैं। इस प्रकार अनजाने में, अनचाहे, हमारे बच्चे मांसाहारी खान-पान के पोषक बनते जा रहे हैं।

मैं आप सभी विद्वानों का हृदय से आभारी हूं कि आपने समाज की दु:खती रगों को उजागर किया है। आप सभी चिंतकों, विद्वानों, लेखकों से निवेदन है कि आप अपने विचार 'जैन समाज की कुरीतियों एवं बचने के उपाय' से संबंधित लेख भेजकर हम सभी को नई दिशा प्रदान करने की कृपा करेंगे। (लेख 'जैन तीर्थवंदना ' में प्रकाशित करने की अनुमति के साथ)

कितना महत्वपूर्ण निर्णय होगा जब महा-मुनिराजों की प्रेरणा से, जैन दर्शन के विद्वान एवं चिंतक, प्रतिष्ठाचार्य, समाज के श्रेष्ठियों द्वारा पूरे देश में रात्रि के भोज, होटलों में होने वाले विवाह आदि पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा करवा सकेंगे।

भगवन तुमको कैसे पाऊँ
पास मेरे सिर्फ 'भक्ति' का धन है
लेकिन पापों से 'कलुषित' जीवन है
'तपश्चरण' का नाम सुना है
लेकिन 'संयम' की राह कठिन है
पावों में माया की 'बेड़ी'
कैसे अपने 'कदम' बढ़ाऊँ ... भगवन् तुझको कैसे पाऊँ।

रिश्तों में जब झूठ बोलने की आवश्यकता महसूस हो तो समझ लो परेशानी आपका दरवाजा खटखटा रही है

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 6 दिसम्बर 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जैन परिवार परामर्श केन्द्र की आवश्यकता	5
जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर भगवान्	8
'जैनम् जयतु शासनम्' उद्घोष सही, 'नमोस्तु शासन' उचित नहीं	11
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी	12
तीर्थक्षेत्र कमेटी का साधारण सभा का अधिवेशन सानंद सम्पन्न	13
कोटा में सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य एवं निर्देशन में	17
गढ़ाकोटा में ..... राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न	19
गढ़ाकोटा में ..... श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं गजरथ महोत्सव	21
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वगिरि कासन गाँव में भ. आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा	24
सोने का महासागर भारत मैकाले ने देखा	26
श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन संस्थान, अतिशय क्षेत्र (सराफा) नांदेड़	28
हमारे नये बने सदस्य	30

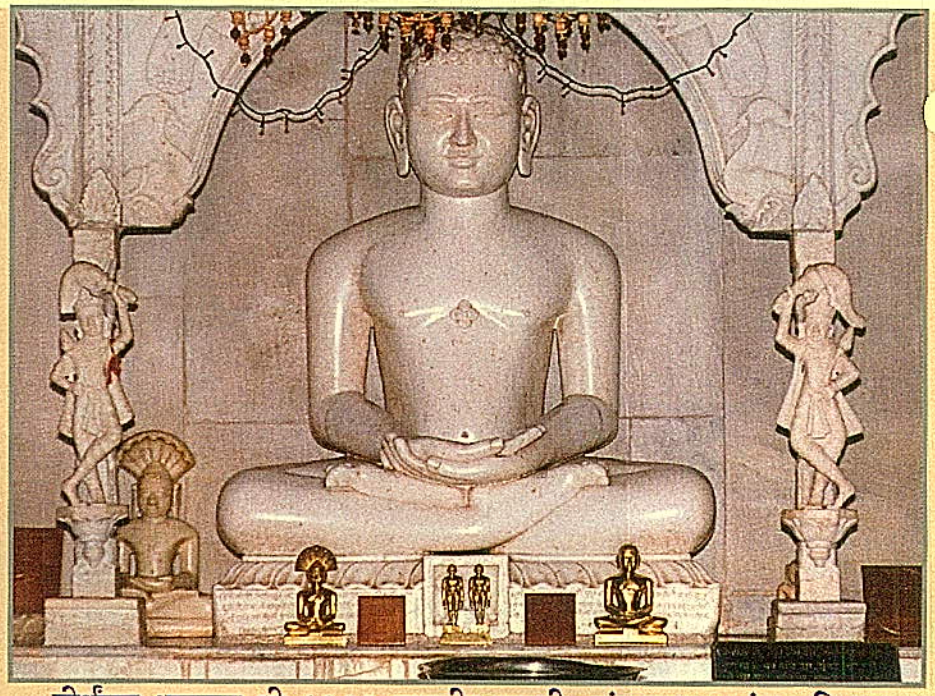

तीर्थंकर भगवान श्री 1008 महावीर स्वामी, कुंडलपुर-नालंदा, बिहार

संसार में सबसे बड़ा पाप रात्रि भोजन है और सबसे बड़ा पुण्य प्रभु की पूजा है

जैन परिवार परामर्श केन्द्र की आवश्यकता

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

परिवार समाज की मूलभूत इकाई है जिसका सामाजिक संगठन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व है। 'जैन परिवार' कहते ही एक ऐसे परिवार की कल्पना की जाती है जिसमें नर-नारी, बच्चे मिलकर रहते हुए सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। धर्म, अर्थ, काम रूप पुरुषार्थ करते हुए अपने पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करते हैं।

'जैन परिवार' की सृष्टि के मूल में विवाह है जिसे जैन पद्धति से किया जाता है। इस विवाह की विशेषता यह है कि इसमें कन्या को ही वर चुनने का अधिकार दिया गया है। इसलिए जयमाला/वरमाला सर्वप्रथम कन्या ही वर को पहनाती है, उसके बाद वर कन्या को माला पहनाता है। जैन विवाह पद्धति के मूल में कुछ शिक्षायें हैं; जो उल्लेखनीय हैं-

१. जैन विवाह के मूल में सप्त परम स्थानों की प्राप्ति की भावना है; यथा- १. सज्जाति २. सद् गृहस्थ ३. पारिव्राजत्व ४. सुरेन्द्रत्व ५. साम्राज्य ६. अरहन्त पद ७. निर्वाण। इसके लिए सप्तपदी पूजा विवाह के समय की जाती है तथा हवन के समय यह आशीर्वाद सूचक काम्य मंत्र पढ़कर आहुति दी जाती है-

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा।

२. इस पद्धति में भोग-यौन सुख के लिए नहीं अपितु सन्तानोत्पत्ति, संसार-वृद्धि के लिए है। जब वर और वधु का गठजोड़ा करते है तब यह श्लोक बोला जाता है-

अस्मिन् जन्मन्येषबंधो द्वयोर्वै, कामे धर्मे व गृहस्थत्वभाजि।
योगो जातः पंचदेवाग्निसाक्षी, जायापत्योरंचलग्रन्थिबन्धात् ।।

अर्थात् गठजोड़े का मतलब यह है कि इन दोनों दम्पत्तियों के समस्त लौकिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा मजबूत प्रेमगांठ है, जो कभी नहीं खुल सकती। क्योंकि यह देव, अग्नि और पंचों की साक्षी में बंधी है।

३. यह जीवन पर्यन्त के लिए व्यवस्था है इसमें विवाह से छुटकारा (तलाक, सम्बन्ध विच्छेद) के लिए कोई स्थान नहीं है। परस्पर-प्रेम, पूरकता, सहयोग, समन्वय और सौहार्द इसके लक्षण हैं। संसार, शरीर, भोगों से उदासीन रूप परिणाम होने पर जिनदीक्षा/आर्यिका दीक्षा ग्रहण की जा सकती है तब ही पूर्व सम्बन्धों का विच्छेद शास्त्रीय पद्धति से किया जायेगा।

जैनधर्म-संस्कृति के अनुसार चार पुरुषार्थ माने गये हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; जिसमें तीन-धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि गृहस्थ जीवन में हो सकती है। गृहस्थ जीवन को तपोवन के समान कहा गया है जिसमें 'स्वदार सन्तोष व्रत' अथवा 'स्वपति सन्तोष व्रत' की अनिवार्यता है। परस्त्री सेवन, परपुरुष सेवन का इसमें त्याग अनिवार्य रूप से कराया जाता है। इसके लिए कन्या एवं वर के वचन विवाह-संस्कार के समय ही होते हैं; जिनकी स्वीकृति अनिवार्य होती है तभी विवाह सम्पन्न होता है।

वर के वचन इस प्रकार हैं-

१. मम कुटुम्बजनानां यथायोग्य-विनयशुश्रूषा करणीया।

(मेरे कुटुम्बियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर-सत्कार करना।)

२. ममाज्ञा न लोपनीया ।

(मेरी आज्ञा को कभी भंग मत करना।)

३. कटुनिष्ठुरवाक्यं न वक्तव्यम् ।

(कड़ुवा और मर्मभेदी वचन मत बोलना।)

४. सत्पात्रादिजनेभ्यो गृहागतेभ्यः आहारादिपाने कलुषितं मनो न कार्यम् ।

(सत्पात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि) के घर आने पर अपने मन को कलुषित मत करना।)

५.रात्रो परगृहे न गन्तव्यम् ।

(रात को दूसरे के घर पर बिना पूछे मत जाना।)

६. बहुजनसंकीर्णस्थाने न गन्तव्यम् ।

(जहाँ बहुत से आदमी जमा हो रहे हो-भीड़भाड़ हों, ऐसे स्थान पर मत जाना।)

७. कुत्सितधर्मि-मद्यपायिनां गृहे न गन्तव्यम् ।

(जिनका आचरण खराब है; ऐसे मांस, मद्यादि सेवन करने वाले कुत्सित धर्मियों के घर पर मत जाना।)

एतानि मदुक्तानि वचनानि यदि स्वीकारोषि तदा मम वामाङ्गी भव।

(यदि मेरे द्वारा कहे गये इन वचनों को आप स्वीकार करती हो तो मेरी पत्नी हो सकती हो।)

एक कदम दुनिया से आगे वही लोग चलते हैं, अंगारों के पथ पर जिनके पांव नहीं जलते हैं ।

कन्या के वचन इस प्रकार हैं-

१. अन्यस्तीभिः सार्द्धं क्रीड़ा न करणीया।

(अन्य स्त्रियों के साथ क्रीड़ा (भोगादि) मत करना।)

२. वेश्यागृहे न गन्तव्यम् ।

(वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना।)

३. द्यूतक्रीडा न कार्या ।

(जुआ मत खेलना।)

४. सदुद्योगाद् द्रव्यमुपार्ज्य वस्त्राभरणैः रक्षणीया।

(न्यायाकूल उद्योग धन्धे से धन कमाकर वस्त्राभरण से मेरी रक्षा करना।)

५. धर्मस्थानगमने न वर्जनीया।

(मन्दिर तीर्थ-क्षेत्रादि धर्मस्थान पर जाने से मुझे मत रोकना।)

६. गुप्त वार्ता न करणीया।

(घर सम्बन्धी कोई बात मुझसे गुप्त मत रखना, ताकि परस्पर सलाह कर सकें।)

७. मम गुप्त वार्ता अन्याग्रे न कथनीया।

(मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना।)

'भगवन्तः कल्याणं करिष्यन्ति' इति वरो वदेत् ।

(भगवान् आपका कल्याण करें; ऐसा वर कहता है और कन्या के उक्त वचनों के प्रति अपनी स्वीकृति देता है।)

हिन्दू विवाह पद्धति में सप्त वचन-

वर की प्रतिज्ञाएं-

१. मैं अपनी धर्मपत्नी को अर्द्धांगिनी, यानी अपने शरीर का आधा अंग समझूंगा और आज से उसका उतना ही ध्यान रखूंगा, जितना अपने शरीर के अंगों का रखता हूँ। गृहलक्ष्मी का अधिकार सौंपकर, उससे परामर्श करके ही जीवन चलाऊंगा।

२. उसमें किसी प्रकार के दोष, विकारों के कारण असंतोष नहीं जताऊंगा। कोई दोष होगा भी, तो प्रेमपूर्वक उसमें सुधार या सहन करते हुए आत्मीयता बनाए रखूंगा।

३. एक पत्नीव्रत का पालन करूंगा और परनारी पर बुरी नजर नहीं डालूंगा।

४. पत्नी को मित्रवत् रखूंगा व स्नेह दूँगा। अपनी आमदनी पत्नी को सौपूंगा। उसकी सुख-सुविधाओं, प्रगति और प्रसन्नता के लिए प्रयत्नशील रहूँगा।

५. किसी के सामने लांछित, तिरस्कृत नहीं करूंगा। मतभेद एकांत में सुलझाऊंगा। सहिष्णु व मधुर व्यवहार करूंगा।

६. उसके बीमार होने, असमर्थता, संतान न होने या किसी गलत व्यवहार पर भी अपने कर्तव्य पालन में कमी नहीं लाऊंगा।

७. उसके व्यक्तित्व विकास में पूरी शक्ति लगाऊंगा और उसके साथ मधुर प्रेमयुक्त चर्चा तथा सद्व्यवहार का पालन करूंगा।

वधू की प्रतिज्ञाएं

१. मैं अपने पति के साथ अपना व्यक्तित्व मिलाकर,सच्चे अर्थों में अर्द्धांगिनी बनकर नए जीवन की सृष्टि करूंगी। उनके परिजनों से मधुरता, शिष्टता, उदारतापूर्वक व्यवहार करूंगी।

२. परिश्रम से घर चलाकर पति की प्रगति में सहायक बनूंगी। आलस्य त्यागूंगी। मितव्ययिता से अपना घर चलाऊंगी और फिजूलखर्ची से बचूंगी।

३. पति के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए पतिव्रत धर्म का पालन करूंगी।

४. सेवा भाव, मधुर वचन, प्रसन्नता का स्वभाव बनाऊंगी। रूठने, कुढ़ने और ईर्ष्या के दुर्गुण नहीं अपनाऊंगी।

५. पति से विमुख न होऊंगी। परमेश्वर मानूंगी, कभी अपमान नहीं करूंगी। मतभेदों को एकांत में सुलझाऊंगी।

६. पति को सेवा-विनय द्वारा संतुष्ट रखूंगी।

७. प्रतिफल की आशा किए बिना कर्तव्यों का पालन करूंगी।

विवाह का शाब्दिक अर्थ है 'उद्वह' अर्थात् वधू को वर के घर ले जाना। 'लूसी मेयर' के अनुसार-"विवाह की परिभाषा यह है कि वह स्त्री-पुरुष का ऐसा योग है, जिससे स्त्री से जन्मा बच्चा माता-पिता की वैध सन्तान माना जाया।" (लूसी मेयर : सामाजिक नृविज्ञान की भूमिका, हिन्दी अनुवाद, पृ.९०)। डब्ल्यू, एच.आर. रिवर्स की दृष्टि में -"जिन साधनों द्वारा मानव समाज यौन सम्बन्धों का नियमन करता है, उन्हें विवाह की संज्ञा दी जा सकती है" (डब्ल्यू.एच.आर.रिवर्स, सामाजिक संगठन, हिन्दी अनुवाद, पृ. २९)। वास्तव में विवाह स्त्री और पुरुष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की एक संस्था है। जिसे सामाजिक, धार्मिक एवं कानूनी रूप से ऐसे समसत आयोजनों में सहभागिता के लिए स्वीकृति प्राप्त होती है जो स्त्री-पुरुष के दैहिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक सन्तुष्टि के लिए जरूरी हो।

जैन विवाह एक संस्कार है जिसमें कन्या को और युवा को एक विशेष रीति से देव-शास्त्र-गुरु की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सन्निधि एवं समाज के प्रमुखों गृहस्थाचार्य की उपस्थिति में पत्नी और पति के रूप मान्यता प्रदान करने के लिए पाणिग्रहण संस्कार किया जाता है। वे दोनों एक-दूसरे के प्रति समर्पित होने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं। यह कर्त्तव्य पूर्ति के लिए सांसारिक धर्म है, कोई समझौता नहीं है।

वैवाहिक जीवन में दैहिक सम्बन्धों का लक्ष्य सन्तान की प्राप्ति है। पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन है। पाणिग्रहण करते समय वर-

मीठा बोलने वाला कभी हितैषी नहीं होता, नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा हितैषी होता है

कन्या से कहता है कि "मैं सामाजिक, धार्मिक मर्यादाओं के पालन के लिए, उत्तम सन्तान की प्राप्ति के लिए तुम्हारा पाणिग्रहण करता हूँ।" समाजजन भी 'वृणीध्वम् ,वृणीध्वम्' अर्थात् वरण कीजिए, वरण कीजिए; ऐसा अनुरोध वर से करते हैं। अग्नि की साक्षी सम्बन्धों की पवित्रता की परिचायक है और सप्तपदी सप्त परम स्थानों की प्राप्ति के लक्ष्य का स्मरण करना है।

आज स्थिति यह है कि विवाह तक तो सब कुछ ठीक रहता है किन्तु ज्यों ही विवाह के उपरान्त सन्तान और परिवार का विकास होता है तब परिवार में असन्तोष एवं कलह की स्थिति बन जाती है; जिसके प्रमुख कारण हैं-

१. संयुक्त परिवार
२. संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति
३. आर्थिक असन्तोष
४. सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति उदासीनता
५. पति-पत्नी में नौकरी का आकर्षण
६. दायित्व एवं कर्तव्यहीनता
७. एकल परिवार
८. बुजुर्गों के संरक्षण का अभाव
९. बढ़ता प्रदर्शन/स्वेच्छाचारिता
१०. पारिवारिक एवं कार्य स्थल का तनाव
११. अधिकारों के लिए संघर्ष/धन-सम्पत्ति पर एकाधिकार की प्रवृत्ति।

उक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं जिनमें स्थान की कमी, महत्त्वांकाक्षा, महानगरीय भागमभाग, आत्मविश्वास की कमी, भड़काऊ फिल्में-टी.वी.धारावाहिक, प्रतीक्षा का अभाव, अतिभौतिक एवं यौन सुख की चाह, सत्संगति का अभाव, धार्मिक उदासीनता, बड़ों के प्रति आदर का अभाव, समाज का दबाव न मानना, कर्तव्य-विमुखता तथा स्वेच्छाचारिता प्रमुख हैं। फलस्वरूप परिवार में तनाव बढ़ जाते हैं अतः परिवार की बेहतरी के लिए 'जैन परिवार परामर्श केन्द्र' की आवश्यकता है।

वर्तमान परिवारों की शोचनीय स्थितियां-

१. दहेज के लिए प्रताड़ना ।
२. सन्तान प्राप्ति की अनिच्छा
३. कन्या/बालक भ्रूण हत्या
४. घरेलू कार्यों को करने में उदासीनता
५. समुचित व्यापार का अभाव, योग्यता के अनुरूप नौकरी का न मिलना
६. परस्पर विश्वास की कमी
७. व्यसन सेवन
८. बुजुर्गों को साथ में नहीं रखना
९. सन्तान के प्रति उदासीनता या अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा
१०. भावी निवेश की चिन्ता
११. भौतिक संसाधनों को प्राप्त करने की तीव्रेच्छा
१२. घरेलू हिंसा/मारपीट/कानूनी संघर्ष
१३. एक-दूसरे के विकास में व्यवधान
१४. असाध्य रोगों की उपस्थिति
१५. विवाह-विच्छेद/प्रेम विवाह/अन्तर्जातीय-अन्तर्उपजातीय विवाह आदि।
१६. बढ़ती आपराधिकता

अमेरिकी उपन्यासकार बूथ टारकिंग्टन ने कहा है कि- "आदर्श पत्नी हर वह महिला है जिसके पास आदर्श पति है। इसलिए भावी दूल्हो! जान लो कि पति बनने के बाद जिम्मेदारी बहुत बढ़ जायेगी और हर पल आपकी समझदारी की परीक्षा होगी।" वर्तमान में कुछ परिवार इस कसौटी पर खरे नहीं उतर पा रहे हैं। पारिवारिक नियम, आदर्श, मूल्य अपनी आस्था खो रहे हैं। सुख के लिए बना परिवार दुःख का कारण बन रहा है। स्थिति यह है कि परिवार टूटे तो टूटे, मुझे इससे क्या? न मैं समझना चाहता हूँ और न समझाना चाहता हूँ। ऐसे मैं क्या रास्ता हो सकता है जो जैन परिवार एक रहें, संगठित रहें और मजबूत रहें? इसके लिए **'जैन परिवार परामर्श केन्द्र'** होना जरूरी है।

जैन परिवार परामर्श केन्द्र की स्थापना एवं कार्य-

भारतवर्ष के प्रत्येक जिले में जहाँ जैन परिवार निवास करते हों वहाँ 'जैनपरिवार परामर्श केन्द्र' की स्थापना की जाय। इसमें कुल ७ या ११ सदस्य हों जिनमें एक प्रमुख परामर्शक एवं ६ या १० सहयोगी परामर्शक रहें। वे सम्बन्धित पक्षों को सुनें, समस्या जानें, समझायें, हल सुझायें और परस्पर सहमति करवायें। इसमें किसी प्रकार की दण्डात्मक व्यवस्था नहीं रहेगी। इसके लिए प्रत्येक मामले के हल के लिए एक से लेकर तीन बैठकें समयान्तराल के साथ आयोजित की जायेंगी। मामलों को गोपनीय रखा जायेगा, इनका प्रचार-प्रसार नहीं किया जायेगा। 'परस्परता' का सिद्धान्त लागू किया जायेगा। आपसी-समझ, समर्पण, सौहार्द, समन्वय, सहयोग इसके मूलमन्त्र होंगे। ऐसा करने पर परिवार समुचित रीति से अपना कर्तव्य पालन करते हुए चल सकेंगे। 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' और 'जियो और जीने दो' की भावना मजबूत होगी। 'जैनम् जयतु शासनम्' का उद्घोष प्रत्येक जैन परिवार में गूंजेगा। इसे देखकर अन्य समाजजन भी कहेंगे-" परिवार हो तो जैनसाहब जैसा।"

जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

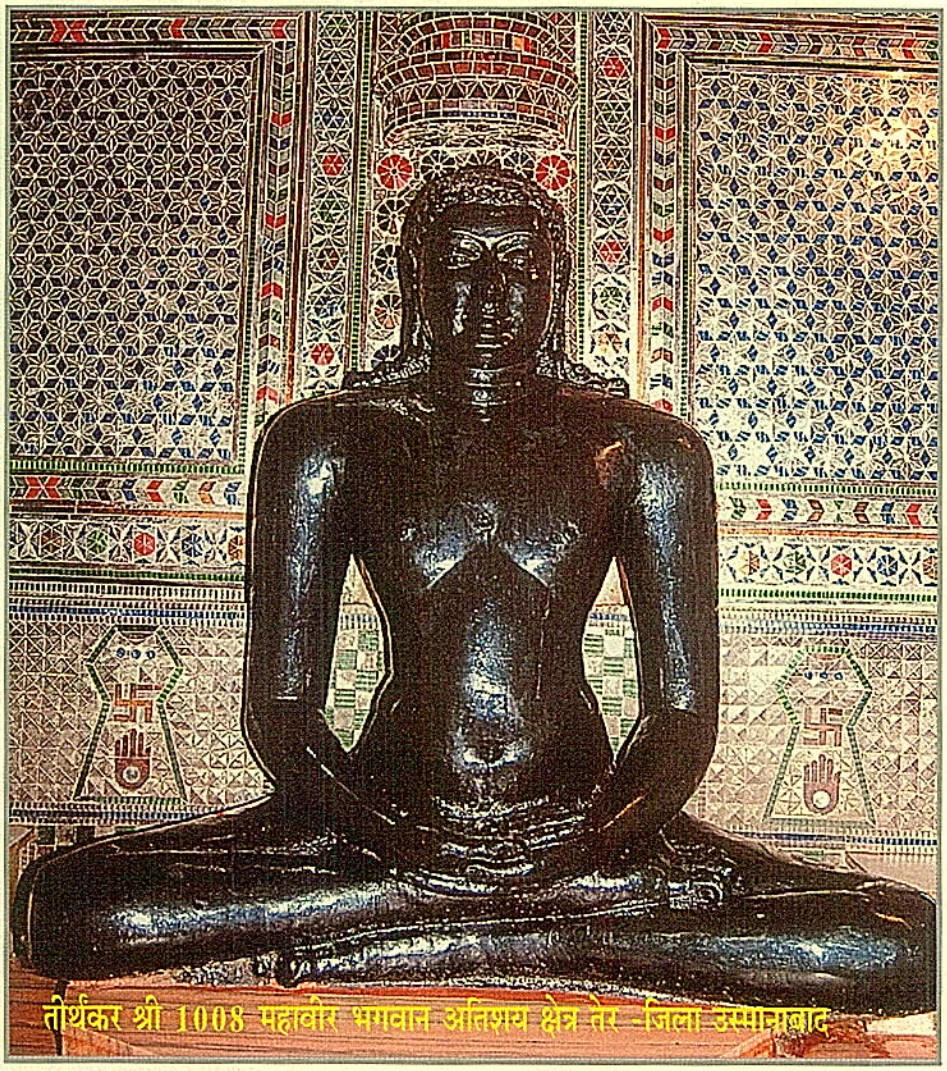
तीर्थंकर श्री 1008 महावीर भगवान अतिशय क्षेत्र तेर -जिला उस्मानाबाद

जैनधर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी का जन्म ५९९ईसा पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र के रहते वैशाली-कुण्डपुर (कुण्डलपुर) में नृपति सिद्धार्थ की रानी प्रियकारिणी त्रिशला के गर्भ से हुआ था। वे नौ माह पूर्व आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन शुभ मुहूर्त में रानी प्रियकारिणी त्रिशला के गर्भ में आये थे। उनके गर्भ में आने से पूर्व छह माह तक देवों ने राजा सिद्धार्थ के गृह-आंगन में निरंतर रत्नों की वर्षा की थी। राज्य का वैभव सर्वत्र बिखरा हुआ प्रतीत होता था। कुण्डलपुर का ऐसा कोई भी ओर-छोर नहीं था जो वैभव सम्पन्न ना हो। राजा सिद्धार्थ के महल का नाम नन्द्यावर्त था। उनका जीव पुष्पोत्तर विमान से अवतरित हुआ था। जन्म के साथ ही सौधर्म इन्द्र का आसन कंपायमान हुआ जिससे उसने अपने अवधिज्ञान से जान लिया कि कुण्डलपुर में चौबीसवें तीर्थंकर का जन्म हुआ है। वह अपने देव परिकर के साथ राजा सिद्धार्थ के महल में आया और अपनी शची से नवजात तीर्थंकर शिशु को रानी के प्रसूति गृह से बुलवाकर ऐरावत हाथी पर विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर ले गया। पाण्डुक शिला पर विराजमान कर सौधर्म इन्द्र ने क्षीरसागर के निर्मल जल से भरे हुए १००८ वृहद् कलशों से तीर्थंकर शिशु का अभिषेक किया। तीर्थंकर के जन्म के साथ प्रकृति, राजयश एवं भौतिकता में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हुई थी इसलिए सौधर्म इन्द्र ने उनका नाम वर्द्धमान तथा चिन्ह सिंह घोषित किया। उनके शरीर का वर्ण स्वर्ण जैसा तथा ऊँचाई सात हाथ थी। वे १००८ शुभ लक्षणों से विभूषित थे, सात भयों से रहित थे। वे आजीवन बाल ब्रम्हचारी रहे। तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के बाद २५० वर्ष बीत जाने पर श्री महावीर स्वामी उत्पन्न हुए थे, इसमें उनकी आयु भी सम्मिलित थी।

एक बार संजय और विजय नामक दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों को किसी पदार्थ के विषय में स[illegible] उत्पन्न हुआ तो वे बालक वर्द्धमान के समीप आये। उनके दर्शन मात्र उनका संदेह दूर हो गया तो उन्होंने बड़ी भक्ति से कहा कि यह बालक सन्मति तीर्थंकर होने वाला है। अतः उन्होंने उनका नाम 'सन्मति' घोषित कर उनकी जय-जयकार की।

एक बार इन्द्र की सभा में देवों में यह चर्चा चल रही थी कि वर्तमान में स[illegible] अधिक शूरवीर श्री वर्द्धमान स्वामी ही हैं; यह सुनकर एक संगम नामक देव उनकी परीक्षा के लिए आया। उस समय वर्द्धमान अन्य राजकुमारों के साथ उपवन में एक वृक्ष पर चढ़े हुए क्रीड़ा कर रहे थे। उन्हें देखकर संगम देव ने उन्हें डराने की इच्छा से भयंकर सर्प का रूप धारण कर उस वृक्ष की जड़ से लेकर स्कंध तक लिपट गया। अन्य सभी राजकुमार-बालक उसे देखते ही भय से कांप उठे और जमीन पर कूदकर भाग गये किन्तु बालक वर्तमान निर्भय होकर उसी सर्प के फण पर चढ़कर क्रीडा करने लगे। बालक वर्द्धमान की निर्भयता को जानकर संगम देव अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हुआ और भगवान् की स्तुति की तथा उनका नाम महावीर घोषित किया। ऐसे ही अन्य प्रसंगों में देवों ने उनका नाम वीर और अतिवीर भी घोषित किया था। इस तरह चौबीसवें तीर्थंकर के पांच नाम मिलते हैं- वर्द्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति, महावीर।

तीस वर्ष की अवस्था में उन्हें जाति स्मरण के कारण वैराग्य हुआ

किस्मत कितनी ही बुलंद क्यों न हो, उसे परिश्रम की 'चौखट' से गुजरना पड़ता है।

और उन्होंने जिनदीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। उनके दृढ़ वैराग्य के निश्चय को जानकर स्वर्ग से लौकांतिक देव आये और उनके वैराग्य की अनुमोदना की। तदनुसार उन्हें चन्द्रप्रभा नामक पालकी में विराजमान कर नाथवन में ले जाया गया। उस पालकी को सबसे पहले भूमि गोचरी राजाओं ने, फिर विद्याधर राजाओं ने और फिर इन्द्रों ने उठाया। इस तरह मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में अपरान्ह के समय उन्होंने कुण्डलपुर के नाथ वन में साल वृक्ष के नीचे सम्पूर्ण वस्त्र-परिग्रह का त्याग कर पंचमुष्टि केशलोंच कर जिनदीक्षा ग्रहण कर ली। जिनदीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया। जन्म से उन्हें मति, श्रुत और अवधि ज्ञान तो था ही। उनकी वृत्ति सिंहवत् थी। आचार्य श्री गुणभद्र ने उत्तरपुराण (४७/३१५) में लिखा है कि-

सिंहेनैव मया प्राप्तं वने मुनिमताद् व्रतम्। मत्वेवेत्येकतां तत्र सैंहीं वृत्तिं समाप सः ।।

अर्थात् मैंने सिंह पर्याय में ही वन में मुनिराज के उपदेश से व्रत धारण किये थे; यही समझकर मानो उन्होंने सिंह के साथ एकता का ध्यान रखते हुए सिंहवृत्ति धारण की थी।

जिन दीक्षा ग्रहण करने के साथ तृतीय भक्त (दीक्षोपवास) का नियम उन्होंने लिया। इसके बाद वे आहार हेतु निकले उन्हें कूलग्राम के राजा कूल ने परमान्न (खीर) का आहार प्रदान किया जिससे पंचाश्चर्य हुए। किंवदन्तियों में यह भी कथन आता है कि उन्होंने चन्दना के हाथों आहार ग्रहण किया जिसे कारागृह में बेड़ियों से जकड़कर बंदी बनाया गया था। भगवान् महावीर के सामने आते ही चन्दना के सब बंधन स्वयमेव खुल गये थे। इस तरह नारियों के उद्धारकर्ता के रूप में भी भगवान् महावीर प्रसिद्ध हुए।

तीर्थंकर महावीर ने मुनि अवस्था में १२वर्ष तक घोर तपश्चरण किया और वैशाख शुक्ल दशमी के दिन अपरान्ह में ऋजुकूला नदी के तट पर [illegible] नक्षत्र के रहते साल वृक्ष के नीचे चार घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया। उसी समय उन्हें अनन्तचतुष्टय की प्राप्ति हुई तथा ३४ अतिशय हुए। सौधर्म इन्द्र तथा देवों ने आकर केवल ज्ञान कल्याणक सम्बन्धी पूजाकर केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया।

केवलज्ञान प्राप्ति के उपरांत सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने एक योजन विस्तृत समोशरण का निर्माण किया। मध्य में अंतरिक्ष में सर्वज्ञ तीर्थंकर श्री महावीर भगवान् विराजमान हुए किन्तु ६६ दिन तक उनकी दिव्यध्वनि नहीं खिरी। इसका कारण यह था कि उनकी वाणी को झेलने वाला कोई गणधर (मुनि) नहीं था। सौधर्म इन्द्र ने वृद्ध विप्र का वेश बनाकर तत्कालीन प्रसिद्ध विप्र इन्द्रभूति गौतम के आश्रम में जाकर काल, द्रव्य आदि से संबंधित प्रश्न पूछा और कहा कि चूंकि हमारे गुरु मौन हैं अतः हमने आपसे इनका उत्तर चाहा है। विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध इन्द्रभूति गौतम इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाया। किन्तु ज्ञान के अहंकार के वश में होने के कारण वह हार मानने के लिए तैयार नहीं हुआ और कहा कि मैं इसका उत्तर तुम्हारे गुरु के सामने ही बताउंगा। सौधर्म इन्द्र तो चाहता ही यही था। वह ७०० शिष्यों के साथ इन्द्रभूति गौतम को लिवाकर समोशरण तक लाया। समोशरण के बाहर बने मानस्तंभ को देखते ही इन्द्रभूति गौतम के ज्ञान का अहंकार दूर हो गया। मिथ्यात्व का नाश हुआ और उसने समोशरण में जाकर तीर्थंकर सर्वज्ञ महावीर प्रभु को नमस्कार कर अपने शिष्यों सहित मुनिदीक्षा ग्रहण कर ली। मुनि दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें गणधर पद प्राप्त हुआ। इन्द्रभूति गौतम सहित कुल ११ गणधर तीर्थंकर महावीर के समोशरण में थे; जिनके नाम इस प्रकार हैं- इन्द्रभूति, वायुभूति, अग्निभूति, सुधर्म, मौर्य, मौन्द्रय्, पुत्र, मैत्रेय, अकंपन, अन्धवेला, प्रभास। केवलज्ञान प्राप्ति के ६६ दिन बाद सर्वज्ञ भगवान् महावीर की दिव्यध्वनि खिरी। वह दिन श्रावण कृष्ण प्रतिपदा का था। इस दिन की याद में प्रतिवर्ष श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को वीर शासन जयंती मनाने की परम्परा प्रारंभ हुई। एक कवि ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि-

वह युगों की मांग थी, जब समय ने तुमको पुकारा।
मास था श्रावण जगत में, वह रही थी तिमिर धारा।।
क्यों न होता विश्व आलोकित तुम्हारे ज्योति रथ से,
कृष्णपक्षी प्रतिपदा को मौन टूटा था तुम्हारा।।

भगवान् महावीर के समोशरण में ३११ अंग और १४ पूर्वो के धारक थे। ९९०० यथार्थ संयम को धारण करने वाले शिक्षक थे। १३०० अवधिज्ञानी थे। केवलियों की संख्या ७०० थी। ९०० विक्रिया ऋद्धि के धारक थे। ५००मनःपर्यय ज्ञानी थे। ४०० अनुत्तरवादी थे। इस प्रकार कुल मुनियों की संख्या १४००० थी। आर्यिकाओं की संख्या ३६००० थी जिसमें आर्यिका चन्दना प्रमुख थीं। १००००० श्रावक तथा ३००००० श्राविकायें थीं। असंख्यात देव-देवियां तथा संख्यात तिर्यंच थे। तीर्थंकर भगवान् महावीर के समोशरण में मुख्य श्रोता राजा श्रेणिक थे जिन्होंने भगवान् महावीर से अकेले आत्मा के विषय में ६०००० प्रश्न पूछे। तीर्थंकर महावीर का कैवल्यकाल ३० वर्ष रहा। उनकी दिव्यध्वनि में छह द्रव्य, सात तत्त्व, संसार और मोक्ष के कारण तथा उनके फल का प्रमाण, नय और निक्षेप द्वारा विवेचन एवं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रम्हचर्य रूप महाव्रतों, अणुव्रतों आदि का सम्यक् उपदेश प्राप्त हुआ जिससे अनेक प्राणियों ने अपना आत्मोद्धार किया।

तीर्थंकर भगवान् महावीर अपनी त्याग, तपस्या एवं अहिंसा के कारण सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय व्यक्तित्व के साथ जन-जन के आदर्श हैं और अप्रत्यक्ष प्रेरक का कार्य करते हैं। आज संसार के विभिन्न धर्मावलंबियों में भी उनका व्यक्तित्व अहिंसा और अपरिग्रह के कारण पूज्य एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त है। वे मानो अहिंसा और अपरिग्रह के पर्याय के रूप में संसार में प्रतिष्ठित हैं। कौन ऐसा है कि जो उनके गुणों की अनदेखी कर सके ? वे सच्चे अर्थों में विजेता हैं; क्योंकि उन्होंने किसी और को नहीं जीता बल्कि स्वयं को जीता है। कहा भी गया है कि-

आदमी साधनों से नहीं, साधना से श्रेष्ठ बनता है

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जये जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस सो परमो जयो।।

अर्थात् जो युद्ध क्षेत्र में हजारों-हजारों लोगों को जीतते हैं वे भी जिन नहीं हैं बल्कि जो एकमात्र अपने आप को जीतते हैं वही सच्चे विजेता हैं, जिन हैं।

वे स्वयं बुद्ध थे और उन्होंने सम्यक् बोधि के लिए १२ वर्ष पर्यन्त तप करके बताया कि हे संसारियो! देखो, बिना प्रयत्न के संसार में कुछ नहीं मिलता और जो पुरुषार्थपूर्वक मिलता है वह केवलज्ञान संसार में अनुपम है, मुक्ति का दाता है। वे निर्भय थे, अभयदाता थे। राग-द्वेष से परे, शरीर में रहते हुए भी आत्म अनुरागी, आत्मचारित्र रूप सम्यक् चारित्र के धनी, निज और पर की आशा से रहित सतत आत्मवैभव को देखते, जानते और उसी रूप प्रवृत्ति करने वाले थे। वे आत्म में चलते हुए आत्मा को ही जीत गये; ऐसे अनुपम व्यक्तित्व सम्पन्न थे भगवान् महावीर।

तीर्थंकर महावीर के व्यक्तित्व के विषय में आचार्य कुन्दकुन्द ने 'प्रवचनसार' में कहा है कि-

एस सुरासुर-मणुसिंद-वंदिदं, धोद घाइ-कम्म-मलं।
पणमामि वड्ढमाणं, तित्थं धम्मस्स कत्तारं।।

अर्थात् घातिया कर्म रहित, देव-असुर-चक्रवर्तियों द्वारा वंदित, धर्म-तीर्थ के कर्त्ता वर्धमान (महावीर) को प्रणाम करता हूँ। मानव समाज में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि वह विवेकी है। वह स्वयं को, मन को, तन को साध सकता है। उसकी साधना सिद्धि के लिए है, स्व-पर कल्याण के लिए है। भगवान् महावीर ने विचार किया और स्वयं की अहिंसा भावना/चारित्र को औरों में पहुँचाने के लिए प्रेरक उपदेश दिया। बिना बोले हुए भी उनका विहार उनके अहिंसक व्यक्तित्व का परिचायक था। वे जहाँ से विचरे लोग अहिंसक, निर्वैर, करुणावान् और अभय होते गये। भगवान् महावीर ने कहा कि-

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

(क्रियाकलाप, प्रतिक्रमण सूत्र, पृ. २६०)

अर्थात् धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं। जिसका मन सदा धर्म में लगा रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

भगवान् महावीर ने जैसा व्यक्तित्व बनाया वैसा हम आप भी बना सकते हैं; लेकिन शर्त यही है कि-

सत्त्वेषु मैंत्रीं, गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं,
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव!

अर्थात् हे देव! मेरी आत्मा निरंतर प्राणियों से मित्रता, गुणीजनों से प्रमोद भाव, दुःखी जीवों के प्रति कृपा का भाव एवं विपरीत वृत्तिवालों के प्रति माध्यस्थ भाव धारण करे।

कम्मं चिणंति सवसा, तस्सुदयम्मि उ परव्वसा होंति।
रुक्खं दुरुहद सवसो, विगलइ स परव्वसो तत्तो।।

अर्थात् कर्म को चुनते हैं तो स्वाधीन होते हैं; किन्तु उसके विपाक में पराधीन होते हैं। जैसे पेड़ पर चढ़ता है तो स्वाधीन किन्तु जब उससे गिरता है तो वह पराधीन होता है।

भगवान् महावीर ने अपने धर्मोपदेश से जहाँ प्राणी मात्र को स्वउत्थान की प्रेरणा दी वहीं मनुष्य समाज में नारियों के प्रति पुरुषों द्वारा किये जा रहे अमानवीय व्यवहार को बदलने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप दास प्रथा और महिलाओं पर अत्याचार बंद हुये। चन्दना की बंधन मुक्ति इसका प्रमाण है। चंदना से भगवान् महावीर का आहारदान ग्रहण तथा तत्संबंधी आश्चर्य को उत्तरपुराण (७४/३४६) में इस प्रकार आचार्य गुणभद्र ने वर्णित किया है-

शील-महात्म्यसंभूत पृथुहेमशराविका।
शालयन्नभाववत्कोद्रवोदना विविवत्सुधी।।

अर्थात् चंदना के शील के माहात्म्य से मिट्टी के बर्तन स्वर्णमय हो गये तथा साधारण उबले हुए कोदों उत्कृष्ट शालितंदुल से निर्मित खीर बन गये।

३० वर्ष तक उन्होंने जन-जन एवं प्राणियों को आत्महित का उपदेश दिया और ७२ वर्ष की आयु में निर्वाण से दो दिन पूर्व योगनिरोध कर कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन ब्रम्हमुहूर्त में स्वाती नक्षत्र के रहते पद्मासन से पावापुर से निर्वाण प्राप्त किया। इन्द्रों ने आकर भगवान् का निर्वाण कल्याणक मनाया। तदनंतर अग्निकुमार जाति के देवों ने भगवान् के नख और केश एकत्रित कर मायामयी शरीर की रचना कर उनका अग्नि संस्कार किया। यह अग्नि संस्कार स्वयमेव होता है। जब अग्निकुमार जाति के देव भगवान् को प्रणाम करते हैं तो उनके मुकुटों से अग्नि प्रज्वलित हो जाती है।

भगवान् महावीर का व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी समस्त सृष्टि के लिए प्रेरक है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ जैसा संपूर्ण देशों का प्रतिनिधि संघ अहिंसा, शांति, सहअस्तित्व और सर्वोदय के लिए कार्य कर रहा है। **भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने राष्ट्रीय नायक के रूप में भारतीय संविधान की मूल प्रति में बंगाल के एक चित्रकार द्वारा निर्मित निर्ग्रन्थ मुद्रा युक्त भगवान् महावीर का चित्र संयोजित किया है ताकि सम्पूर्ण देशवासी उनके प्रति श्रद्धान्वित होकर उनके बताये अहिंसा के रास्ते पर चल सकें।** आज संपूर्ण विश्व का आदर्श महावीर और उनके विचार हैं क्योंकि बिना अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के आदर्श समाज का निर्माण संभव नहीं है। भगवान् महावीर स्वामी के उपदेशों को सार्थक करते हुए हम अहिंसक एवं अपरिग्रही बनने का संकल्प लें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

अखिल भारतीय स्तर के विद्वानों द्वारा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित

'जैनम् जयतु शासनम्' उद्घोष सही, 'नमोस्तु शासन' उचित नहीं

सल्लेखना/संथारा राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में समागत विद्वज्जनों की सभा 22 अक्टूबर, 2015 को सायं 6.30 बजे डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर की अध्यक्षता में आचार्यश्री विद्यासागर वाटिका, भीलवाड़ा (राज.) में सम्पन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया -

सल्लेखना/संथारा राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में समागत समस्त विद्वज्जन गहन विचार-विमर्श, संतों से हुई पूर्व चर्चा से प्राप्त निष्कर्षों तथा आगम एवं लोकप्रचलित परम्परानुसार सर्वसम्मति से यह निर्णय लेते हैं कि जैन समाज में अत्यन्त प्राचीनकाल से 'जैनम् जयतु शासनम्' का उद्घोष प्रचलन में रहा है अतः इसे ही भविष्य में जारी रखा जाये।

'जैनम् जयतु शासनम्' के अतिरिक्त कल्पित 'नमोस्तु शासन' का व्यवहार नहीं करना चाहिए। 'मूलाचार' में 'नमोस्तु शासन' शब्द का कहीं भी उल्लेख नहीं है। यह आगमोचित भी नहीं है। यहां ध्यान रहे कि हमें नयी परम्परा स्थापित करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि उससे जैनत्व की हानि न हो।

जो महानुभाव विशेष प्रेरणा देकर अपनी सभाओं में, अपनी कृतियों में 'नमोस्तु शासन' का व्यवहार कर रहे हैं उनसे भी विद्वज्जन करबद्ध निवेदन करते हैं कि वे अपने व्यवहार में 'जैनम् जयतु शासनम्' का ही उद्घोष करें और करावें। अन्यथानुरूप प्रवृत्ति करने पर जैनत्व की हानि होगी तथा जैनधर्म की प्राचीनता पर कुठाराघात होगा।

प्रस्ताव के समर्थन में हस्ताक्षर तथा समर्थन करने वाले प्रमुख विद्वान - 1. पं रतनलाल बैनाडा, आगरा, 2. डॉ. रमेशचन्द जैन, श्रवणबेलगोला, 3. डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर 4. डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर, 5. डॉ. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ 6. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर 7. डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद 8. डॉ. धर्मेन्द्र जैन, जयपुर 9. डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, सनावद, 10. डॉ. कपूरचन्द जैन, खतौली 11. ब्र. डॉ. अनिल जैन, जयपुर, 12. डॉ. सुमत जैन, जयपुर 13. डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी 14. डॉ. अनेकांत जैन, नई दिल्ली, 15. डॉ. ज्योति जैन, खतौली 16. डॉ. विजय कुमार जैन, लखनऊ 17. डॉ. कमलेश कुमार जैन, वाराणसी 18. डॉ. राका जैन, लखनऊ 19. प्रा. अरुणकुमार जैन, सांगानेर 20. डॉ. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, वैशाली 21. डॉ. श्रीयांसकुमार जैन, जयपुर 22. डॉ. उज्ज्वला गोसावी, औरंगाबाद 23. डॉ. अशोक कुमार जैन, वाराणसी 24. डॉ. संतोष कुमार जैन, सीकर 25. डॉ. आलोक जैन, नई दिल्ली 26. डॉ. आनंद कुमार जैन, जयपुर 27. पं. विनोद कुमार जैन, रजवांस 28. डॉ. पुलक जैन, जबलपुर 29. पं. शैलेष जैन, मदनगंज-किशनगढ़, 30. पं. सोनल जैन, नई दिल्ली.

उक्त प्रस्ताव के संदर्भ में मेरा सभी महासभा, महासमिति, जैन मिलन, दक्षिण भारत जैन सभा, तीर्थक्षेत्र कमेटी, शास्त्रि परिषद, विद्वत्परिषद तथा समस्त आचार्य एवं मुनि संघों तथा सामाजिक संस्थाओं, पंचायतों से निवेदन है कि वे सभी धार्मिक, सामाजिक एवं मांगलिक कार्यक्रमों में 'जैन जयतु शासनम्' का ही उद्घोष करें, ताकि जैनधर्म ऊर्जस्वित बना रहे। हमारे सभी पूज्य आचार्यों, मुनियों का भी यही आदेश और उपदेश है।

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'
महामंत्री-श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद
एल 65, न्यू इंदिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.)

मुनिपुंगव श्री सुधासागर तीर्थरक्षा पुरस्कार से डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' पुरस्कृत

भीलवाड़ा, राजस्थान में विराजित परम जिनधर्म प्रभावक, आध्यात्मिक संत मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री गंभीरसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री धैर्यसागरजी महाराज के सान्निध्य में आचार्यश्री विद्यासागर वाटिका के भव्य सभागार में आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, व्यावर के तत्वावधान तथा श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के सौजन्य से श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के महामंत्री एवं पार्श्व ज्योति एवं जैन तीर्थ वंदना के प्रधान संपादक डॉ.सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' को 51000/- रु. की राशि के साथ मुनिपुंगव श्री सुधासागर तीर्थरक्षा पुरस्कार से ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी श्री ज्ञानेन्द्र गदिया-श्रीमती मधु गदिया, श्री नीरज गदिया-श्रीमती मोनिका गदिया ने वस्त्रालंकार से विभूषित कर प्रशस्ति पत्र के साथ पुरस्कृत किया। प्रशस्ति पत्र का वाचन प्राचार्य अरुण कुमार जैन (केन्द्र निदेशक) ने किया। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' के साथ उनकी सहधर्मिणी श्रीमती इन्द्रा जैन (प्रकाशक-पार्श्व ज्योति) का भी सम्मान किया गया। अध्यक्ष के रूप में डॉ. जयकुमार जैन, सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. रमेशचन्द जैन, डॉ. फूलचन्द 'प्रेमी', डॉ. शीतलचन्द जैन उपस्थित थे। इस अवसर पर सल्लेखना/संथारा राष्ट्रीय विद्वतसंगोष्ठी में समागत प्रो. वृषभप्रसाद जैन, प्रो. नलिन के. शास्त्री, डॉ. अशोक कुमार जैन, डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, डॉ. कपूरचन्द जैन, डॉ. कमलेशकुमार जैन, श्री पूनमचन्द बड़जात्या, डॉ. ज्योति जैन, सुश्री अपराजिता जैन, डॉ. राजीव प्रचंडिया, पं. शैलेष शास्त्री सहित शतकाधिक विद्वान उपस्थित थे। सभी विद्वानों ने डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' का मोतीमाल से अभिनंदन कर शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

आदमी उच्चारण से नहीं, उच्च आचरण से श्रेष्ठ बनता है

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

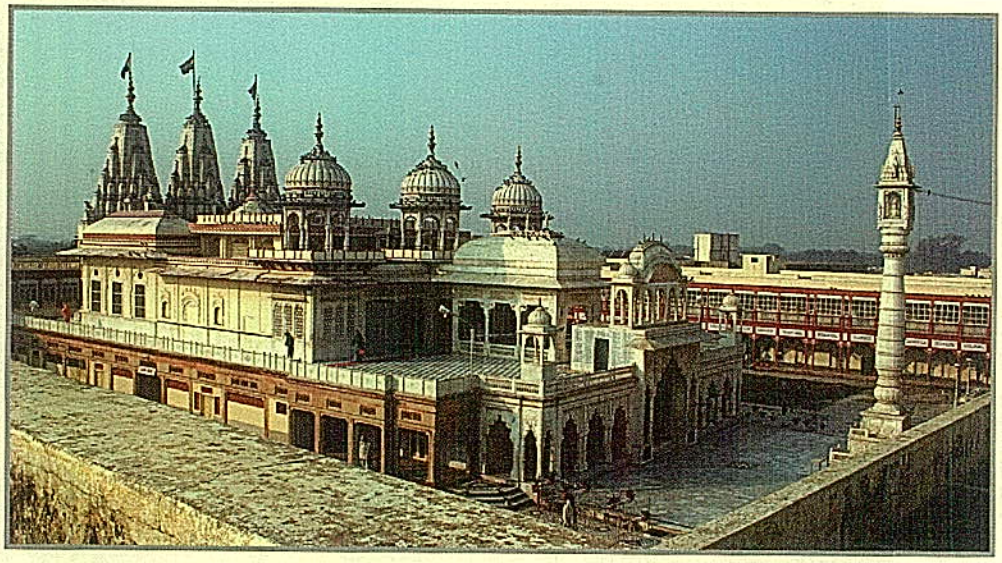

जयपुर। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी (जिला करौली) में विश्ववंद्य भगवान महावीर का 2542वाँ निर्वाण दिवस बहुत ही धूमधाम के साथ गरिमापूर्वक मनाया गया। निर्वाण दिवस के पूर्व दिन दिनांक 10 नवम्बर, 2015 को प्रातः 8.00 बजे श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय, श्री महावीर जी की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राजकुमार जी संतोषकुमार जी गंगवाल, सुजानगढ़ प्रवासी बोगाई गॉव (आसाम) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। श्री महावीरजी क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय दिया गया तथा श्री महावीरजी क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेन्द्रकुमार पाटनी एवं सदस्य श्री उमरावमल जी संघ द्वारा उनका तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर व भगवान महावीर का चित्र भेंट कर सम्मान किया गया। इसके पश्चात श्री दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय, श्री महावीर की छात्राओं द्वारा ध्वजगीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि वे अपने आपको बहुत ही सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के पूर्व दिवस पर क्षेत्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ध्वजारोहण करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात मानद मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी द्वारा क्षेत्र की समस्त योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा उपस्थित सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करते हुए 10 व 11 नवम्बर, 2015 के कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की।

इस समारोह के पश्चात बड़े बाग में कटला से जुलूस ले जाया गया, जिसमें पालकी में यंत्रराज विराजमान थे। साथ में बैण्ड वादक एवं स्कूल के छात्र-छात्राएं तथा यात्रीगण थे। वहां पर 21 कलशों की बोलियां देश के विभिन्न भागों से आये हुए यात्री महानुभावों ने ली और कार्यक्रम के पश्चात महिलाओं द्वारा उन कलशों को लेकर जुलूस के रूप में कटला की ओर प्रस्थान किया गया। रास्ते में कांच मंदिर (पार्श्वनाथ मंदिर) के पदाधिकारियों द्वारा यंत्रराज की आरती की गई। कटला में जुलूस पहुंचने के पश्चात स्कूल के बालक-बालिकाओं को मोदक वितरण किये गये।

मध्याह्न 1.30 बजे दिगम्बर जैन भक्ति संगीत मण्डल श्री महावीरजी द्वारा पश्चिमी पाण्डाल में बहुत ही गरिमापूर्वक साजों पर पूजन की गई। तत्पश्चात दिन के 4.00 बजे कलशाभिषेक हुए एवं श्रीजी की माल लेने का सौभाग्य श्री निर्मल कुमार जी सेठी को प्राप्त हुआ। श्री सेठी का क्षेत्र की प्रबंधकारिणी कमेटी के अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री नरेन्द्र मोहन जी कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार जी पाटनी, मानद मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी, कोषाध्यक्ष श्री बलभद्रकुमार जी जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जी सेठी, सदस्य श्री उमरावमल जी संघी द्वारा सम्मान किया गया।

सायंकाल 7 बजे कटला पश्चिमी पाण्डाल में सामूहिक आरती की गई तथा श्री दिगम्बर जैन भक्ति संगीत मण्डल श्री महावीरजी द्वारा भजन एवं भक्ति संगीत प्रस्तुत किये गये।

दिनांक 11-11-2015 को प्रातः 4 बजे से 4.45 बजे तक शुद्ध वस्त्र पहनकर श्रावकों ने मंदिरजी में प्रवेश किया और उन्हें भगवान महावीर की मूल प्रतिमा के चरण छूने का सौभाग्य मिला। उसके बाद 4.45 बजे से निर्वाण पूजन प्रारम्भ हुई तथा ठीक 5.45 बजे मुख्य वेदी, उसके सामने वाली वेदी तथा कटला पूर्वी पाण्डाल में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसके बाद प्रबंधकारिणी कमेटी के पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण एवं क्षेत्र पर पधारे अन्य श्रेष्ठीजन गाजे-बाजे से चरण छत्री पर पहुंचे और वहाँ निर्वाण लाडू चढ़ाया तथा मुख्य मंदिर की समस्त वेदियों पर, मानस्तम्भ के आगे एवं स्वाध्याय कक्ष में लाडू चढ़ाया गया।

इस अवसर पर पूरे क्षेत्र में शानदार विद्युत की सजावट की गई। दोनों दिन के सभी कार्यक्रमों में श्री वीर सेवक मण्डल, जयपुर के मंत्री श्री भानुकुमार जी छाबड़ा एवं स्वयंसेवकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभी ने कार्यक्रमों में पूर्ण रूपेण सहयोग प्रदान किया।

इस प्रकार दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी (जिला करौली) में भगवान महावीर का 2542वाँ निर्वाण दिवस का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

- महेन्द्र कुमार पाटनी/मानद मंत्री

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

29 नवम्बर, 2015 को श्री बड़ागांव क्षेत्र (उ.प्र.) पर तीर्थक्षेत्र कमेटी का साधारण सभा का अधिवेशन सानंद सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की साधारण सभा का अधिवेशन रविवार दिनांक 29 नवम्बर, 2015 को प्रातः 11 बजे से श्री पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर बड़ागांव (खेकड़ा) जिला-बागपत (उ.प्र.) के सभागार में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, कटनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में करीब 100 से अधिक सदस्यगण उपस्थित रहे।

अधिवेशन की कार्यवाही पं. श्रेयांस कुमार जी जैन, बड़ौत के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम भगवान पार्श्वनाथ के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन की विधि सम्पन्न की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने उपस्थित सभी महानुभावों का हार्दिक स्वागत किया। अधिवेशन में कार्यावली के अनुसार निम्नलिखित कार्यवाही सम्पन्न की गई।

- गत दिनांक 25 अगस्त, 2013 को देहरा-तिजारा क्षेत्र पर सम्पन्न हुई साधारण सभा के अधिवेशन की कार्यवाही की संपुष्टि की गई।
- तीर्थक्षेत्र कमेटी का वर्ष 2013-14 एवं 2014-15 का ऑडिटेड हिसाब सर्वानुमति से स्वीकृत किया गया।
- महामंत्री द्वारा पिछले 2 वर्षों की कार्य प्रगति की रिपोर्ट कर-तल ध्वनि से स्वीकृत की गई।
- महामंत्री द्वारा पिछले 2 वर्षों में कमेटी की विशेष उपलब्धियों की जानकारी निम्न प्रकार दी गई।

1. ध्रुवफण्ड में पिछले दो वर्षों में ढाई करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। दो वर्ष पहले तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं ट्रस्ट फण्ड में कुल 7 करोड़ 50 लाख रुपये जमा थे अब 10 करोड़ से अधिक का फण्ड एकत्रित हो गया है।
2. मार्च 2015 तक आय-व्यय खाते में करीब 90 लाख रुपये जमा थे। चालू वर्ष में करीब 50 से 60 लाख रुपये और जमा होंगे। इस प्रकार करीब डेढ़ करोड़ रुपये आय-व्यय खाते में जमा हैं।
3. पिछले दो वर्षों में श्री सम्मेदशिखरजी की सभी टोंकों का विशेषकर पारसनाथ टोंक का एवं सड़क का जीर्णोद्धार कराया गया है जिस पर करीब 1 करोड़ 65 लाख रुपये खर्च हुए हैं।

   इसके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के जीर्णोद्धार एवं विकास के लिए रु. 1 करोड़ 12 लाख रुपये की सहायता दी गई है।
4. डाक बंगले पर सभी तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए शुद्ध भोजन की व्यवस्था जनवरी 2014 से की गई है जिसका लाभ करीब 38 हजार तीर्थयात्रियों को मिला है। यह व्यवस्था श्री पंकज जैन दिल्ली की ओर से प्रारम्भ की गई है जिसमें श्री अशोक पाटनी एवं श्री प्रभात जैन का भी सहयोग मिला है।
5. श्री सम्मेदशिखरजी क्षेत्र की आमदनी में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। दो वर्ष पूर्व करीब 75 लाख रुपये की वार्षिक आय हुआ करती थी जो अब बढ़कर वर्ष 2014 में 1 करोड़ 9 लाख एवं वर्ष 2015 में 1 करोड़ 29 लाख रुपये एवं अप्रैल 2015 से अब तक करीब 1 करोड़ 40 लाख रुपये की आय केवल शिखर जी में हुई है। इस बढ़ोत्तरी में पारस चैनल टी.वी. के द्वारा किये गये प्रचार-प्रसार के साथ भाई श्री सुनील जैन 'शिवम्' दिल्ली एवं श्री खुशाल जैन 'सी.ए.' का सराहनीय सहयोग रहा है। इन लोगों ने बार-बार शिखरजी जाकर टोकों एवं रास्तों का निरीक्षण कर उसकी फोटोग्राफी कराई एवं जीर्णोद्धार के लिए मार्गदर्शन दिया।
6. जैन समुदाय को अल्पसंख्यक का दर्जा मिला, इसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से प्रयास किये गये। मैंने भी पारस चैनल के सहयोग से काफी प्रयास किये। इसी प्रकार संथारा प्रथा पर राजस्थान हाई कोर्ट के दिये गये निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अर्जी करने एवं उस पर स्टे-ऑर्डर प्राप्त करने में काफी प्रयत्न किये हैं।
7. इस वर्ष भगवान पार्श्वनाथ की मोक्ष सप्तमी का प्रसारण पारस चैनल के द्वारा होने से तीर्थयात्रियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इस वर्ष करीब 25 हजार से अधिक यात्रियों ने निर्वाण लाडू चढ़ाये हैं। मोक्ष सप्तमी पर निर्वाण लाडू का प्रसारण निरन्तर होना चाहिए, जिससे तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि हो सके।

- आगामी वर्ष 2015-16 के लिए लेखा-परीक्षक के रूप में मेसर्स यू.एस.शाह एण्ड एसोसिएट्स की नियुक्ति की गई।
- श्री सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनारजी, श्री ऋषभदेव (केशरियाजी), श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर के बारे में चल रहे कोर्ट केसेस की वर्तमान स्थिति के साथ समझौते के माध्यम से चल रहे विवादों को सुलझाने के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई।
- तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी क्षेत्र के विकास कार्यों की जानकारी देते हुए श्री प्रवीण जैन और उनके परिवार की ओर से प्राप्त उल्लेखनीय

बड़ागांव स्थित साधारण सभा का दृश्य

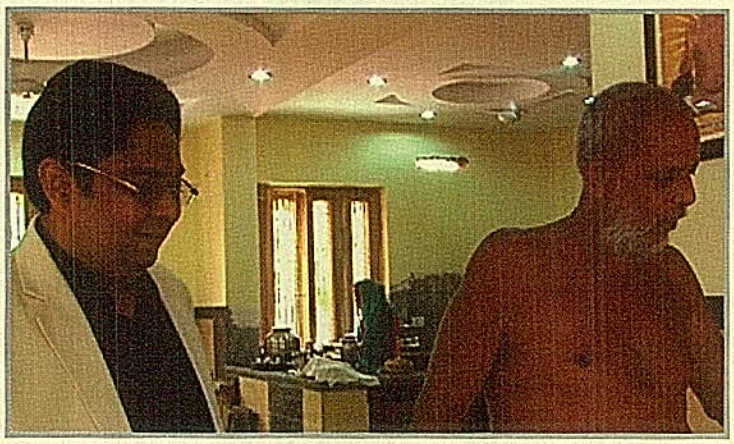

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

बड़ागांव स्थित साधारण सभा का दृश्य

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

योगदान की प्रशंसा करते हुए श्री प्रवीण जैन एवं उनके परिवारजन का माला, सम्मान पत्र एवं शिखरजी की टोंक स्मृति चिह्न भेंटकर उनका सार्वजनिक अभिनंदन किया गया।

भव्य लोकार्पण

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ागांव (बागपत) पर
''साधुवसतिका - प्रवचन सभागृह,आहारशाला एवं वी.आई.पी. अतिथिगृह'' का निर्माण
परमपूज्य राष्ट्रसंत आचार्य विद्यासागरजी महाराज के 50वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में
परमपूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में
कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन (चेयरमैन- पारस चैनल) ने पिताश्री नरेश कुमार जी जैन की शुभ प्रेरणा से दान तीर्थ की अविरल परंपरा की अनुमोदना से कराया, जिसका भव्य लोकार्पण आज दिनांक 29 नवम्बर, 2015 को किया गया। इस अवसर पर बड़ागांव तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्री पंकज जैन के पिता श्री नरेशचन्द जी जैन (सूप वाले) एवं उनके परिवारजनों का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया।

- **तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में आयोजित लोकार्पण समारोह में बड़ागांव क्षेत्र कमेटी की ओर से तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेश जैन को माला, दुपट्टा, सम्मान पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका स्वागत किया गया। बड़ागांव क्षेत्र कमेटी की ओर से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारियों को स्मृति चिह्न एवं माला अर्पण कर स्वागत किया गया।**
- **राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव की वैकल्पिक व्यवस्था के बारे में आम सहमति नहीं बनने से प्रस्ताव को स्थगित रखा गया।**

तद्नंतर बैठक सधन्यवाद विसर्जित हुई।

श्री जटवाड़ा क्षेत्र

भगवान श्री पार्श्वनाथजी के 2792वें जन्म कल्याणक दिवस पर श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनगिरी जटवाड़ा (औरंगाबाद) की वार्षिक यात्रा का आयोजन मंगलवार तारीख 5 जनवरी, 2016 को किया गया है। वार्षिक यात्रा की शुरुआत श्री संदीप कुमार कल्याणमल ठोले के शुभ हस्ते धर्म ध्वजारोहण से होगी। इसके पश्चात मूलनायक श्री संकटहर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा का पंचामृत महामस्तकाभिषेक होगा। इस अवसर पर श्री कल्याण मंदिर विधान एवं महाप्रसाद का आयोजन श्री रमणलालजी, शिखरचंदजी, नंदलालजी, विजयकुमार जी महावीरजी कासलीवाल अंबेलोहोळवाला परिवार द्वारा किया गया है। वार्षिक यात्रा की रंगीन निमंत्रण पत्रिका प्रा. श्री सुरेशजी शहा द्वारा निकाली गई है। इस यात्रा महोत्सव पर सभी श्रावक-श्राविकाओं ने ज्यादा से ज्यादा संख्या में उपस्थित रहकर धर्मलाभ लेवें, ऐसा क्षेत्र अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रसा साहुजी, महामंत्री श्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश कासलीवाल एवं विश्वस्त मंडल ने आवाहन किया।

- देवेन्द्र कुमार काला, औरंगाबाद

कोटा में मुनिपुंङ्गव सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य एवं निर्देशन में निर्मित जिन मंदिर, अस्पताल एवं छात्रावास

कोटा :सन् 2001 में जब प्रथम बार परमपूज्य मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज यहाँ आये थे उसके पहले करीब 25 से 30 लोग मंदिरजी में पूजन-प्रक्षाल के लिए आया करते थे। उसके बाद 2001 में करीब 150 लोग मंदिर जी में आने लगे। सन् 2014 में जब मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज का कोटा में आगमन हुआ तो यहां का कायाकल्प ही हो गया। मंदिर जी में प्रतिदिन तीन सौ से साढ़े तीन सौ लोग दर्शन-पूजन के लिए आने लगे। यहां निर्माणाधीन गर्ल्स हॉस्टल में इस समय 177 लड़कियां रहती हैं। लड़कों के हॉस्टल में वर्तमान में 250 लड़के रह रहे हैं। जिन देव दर्शन दिन में ही भोजन करने की व्यवस्था है। रात्रि भोजन निषेध है। बच्चों को संस्कारित करने में और दूसरा कोई उपक्रम नहीं हो सकता। पूरे भारतवर्ष में जैनत्व के संस्कार के लिए इसी प्रकार की शिक्षा संस्कार बेंगलोर, पूना, मुंबई, नागपुर ऐसे बड़े-बड़े शहरों में जैन सिद्धांत के अनुसार समाज को गर्ल्स एवं लड़कों के हॉस्टल बनवाकर उन्हें संस्कारित करना चाहिए तभी हमारा धर्म और संस्कृति सुरक्षित रह सकती है।

छात्रावास (लड़कों का) का शिलान्यास

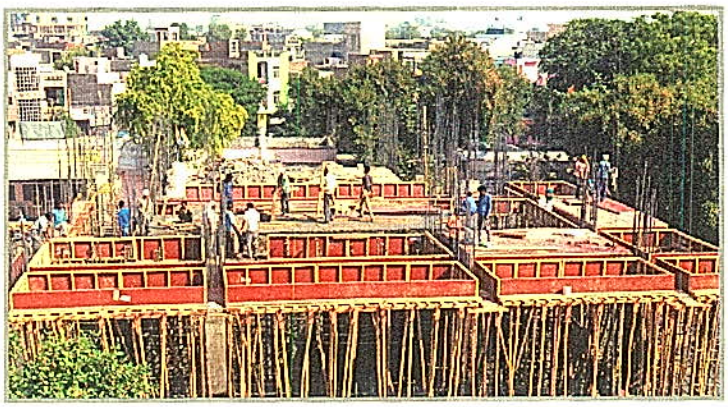

मंदिरजी का शिलान्यास

नवीन छात्रावास (लड़कों का) का पीछे का दृश्य

छात्रावास (लड़कों का) का नूतनीकरण का दृश्य

छात्रावास (लड़कों का) का नूतनीकरण का दृश्य

यूं ही हम दिल को साफ रखा करते थे, पता नहीं था कि कीमत-चेहरों की होती है

कोटा में सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य एवं निर्देशन में निर्मित अस्पताल एवं छात्रावास (लड़कियों के लिये)

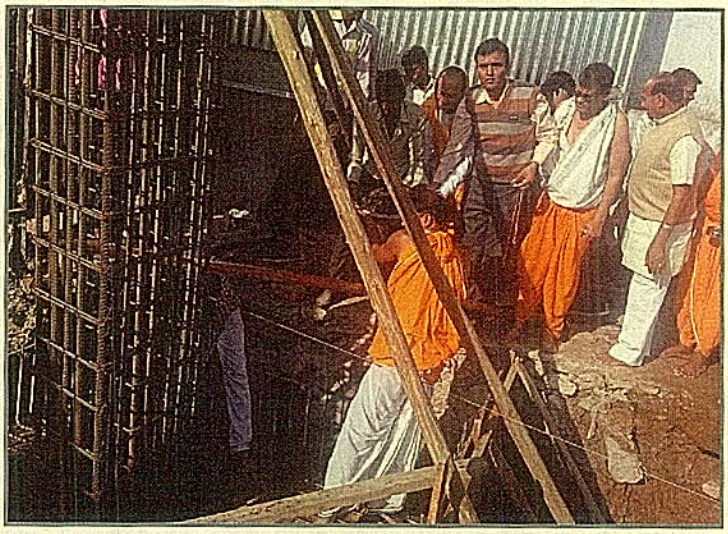

छात्रावास (लड़कियों का) का शिलान्यास

पूर्व छात्रावास (लड़कों का) का दृश्य

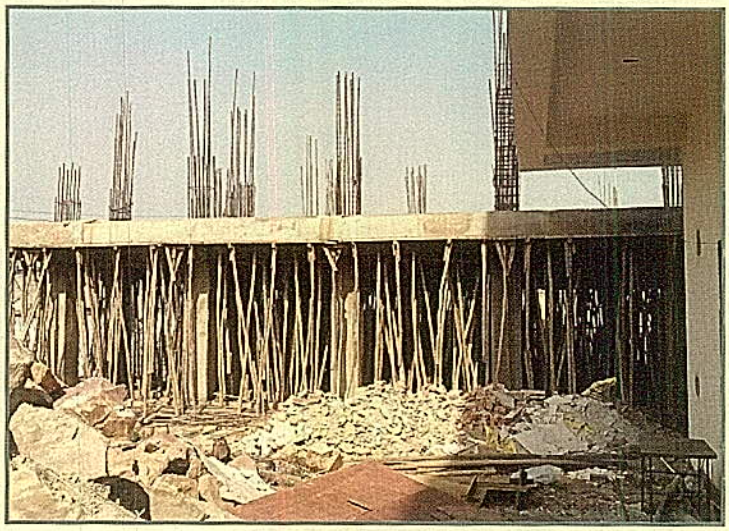

अस्पताल का शिलान्यास

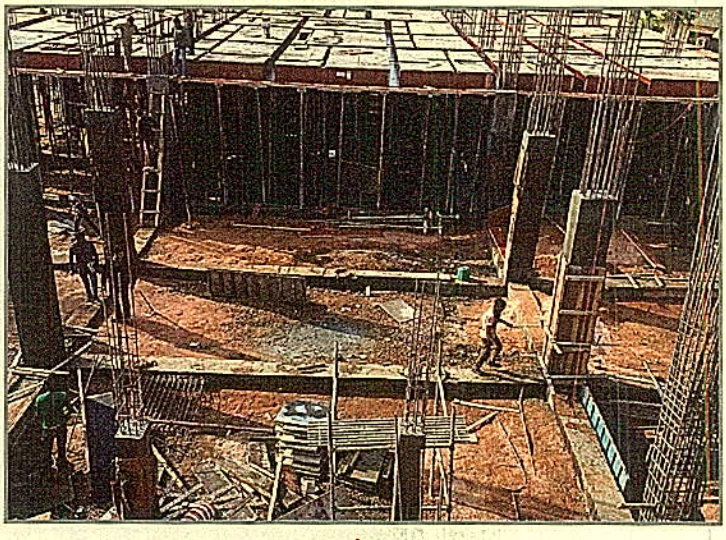

छात्रावास (लड़कियों का) का बांधकाम

नूतन छात्रावास (लड़कियों का)

नूतन छात्रावास (लड़कियों का)

दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका 'अहम्' और दूसरा उसका 'वहम्'

गढ़ाकोटा में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज (ससंघ) के सान्निध्य में मुनिश्री अजितसागरजी महाराज की प्रेरणा से

श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के तत्वावधान में राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

गढ़ाकोटा, परम पूज्य संतशिरोमणि वरिष्ठतम आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज (ससंघ) के सानिध्य में राजा मर्दन सिंह की ऐतिहासिक नगरी एवं अमर शहीद श्री सावूलाल जैन की जन्मभूमि गढ़ाकोटा, जिला -सागर (म.प्र.) में ३० नवम्बर से ६ दिसम्बर, २०१५ तक आयोजित श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत ५ दिसम्बर, २०१५ को परमपूज्य मुनिश्री अजितसागरजी महाराज एवं ऐलक श्री विवेकानन्दसागर जी महाराज की प्रेरणा से श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के तत्वावधान में कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' के संयोजकत्व में राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गयी। यहां उल्लेखनीय है कि गढ़ाकोटा नगर में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी विद्यमान है तथा आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा दीक्षित मुनिश्री गुप्तिसागरजी महाराज, मुनिश्री अजितसागरजी महाराज, ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज एवं आर्यिका श्री आगमवती माताजी तथा अन्य आचार्य से दीक्षित मुनिश्री प्रार्थनासागरजी महाराज इस नगर के गौरव हैं। यहां लगभग २५० वर्ष बाद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन अपने आप में गौरव का विषय है। प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया, बण्डा तथा सहयोगी ब्र. सुनील भैया, इंदौर, पं. श्रेयांसकुमार जैन, सागर एवं श्री अशोक जैन, दोराहा, संगीतकार ने परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के निर्देशन में सम्पूर्ण प्रतिष्ठा कार्य संयोजित किये।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत दिनांक ५ दिसम्बर, २०१५ को आयोजित राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी में निम्नलिखित विद्वानों ने अपनी सहभागिता की - डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर, डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत, पं. अभयकुमार जैन, बीना, डॉ. नेमिचन्द जैन, खुरई, डॉ. अरुणकुमार जैन, सांगानेर, डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर, डॉ. फूलचन्द 'प्रेमी', दिल्ली, डॉ. कमलेशकुमार जैन, वाराणसी, प्रो. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ, डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद, डॉ. अशोक कुमार जैन, वाराणसी, प्रो. वीरसागर जैन, नई दिल्ली, डॉ. कपूरचन्द जैन, खतौली, डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, सनावद, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन, बुरहानपुर, डॉ. कमलेश कुमार जैन, जयपुर, डॉ. अनेकांत जैन, नई दिल्ली, ब्र. डॉ. अनिल जैन, जयपुर, पं. विनोद कुमार जैन, रजवांस, पं. लालचन्द जैन 'राकेश', भोपाल, डॉ. कस्तूरचन्द 'सुमन', बांसा तारखेड़, श्री अखिल बंसल, जयपुर, पं. शिखरचन्द जैन, साहित्याचार्य, सागर, पं. सुखदेव जैन, सागर, प्रा. महेन्द्र कुमार जैन, मुरैना, पं. पवनकुमार जैन 'दीवान', मोरेना, डॉ. पंकज जैन शास्त्री, भोपाल, डॉ. हरिश्चन्द्र जैन, मुरैना, डॉ. सुमत जैन, जयपुर, डॉ. संजय जैन, सागर, पं. राजकुमार जैन, सागर, पं. शैलेष जैन, किशनगढ़, पं. वीरेन्द्र कुमार जैन, रतलाम, डॉ. आराधना जैन 'स्वतंत्र', गंजबासौदा, पं. संजीवकुमार जैन, महरौनी, पं. ज्ञानचन्द्र जैन दाऊ, सागर, पं. सुरेन्द्र कुमार जैन, वाराणसी, पं. पन्नालाल जैन, गढ़ाकोटा, श्रीमती सुषमा जैन, वाराणसी, श्रीमती इन्द्रा जैन, बुरहानपुर, श्रीमती प्रसन्न जैन, मुजफ्फरनगर, पं. राजेन्द्र कुमार जैन, सांगानेर, पं. आशीष जैन, बम्हौरी, पं. श्रवणकुमार जैन, सागर, पं. विमलकुमार जैन, किशनगढ़, पं. विनीत कुमार जैन, साढ़मल, पं. श्रेयांसकुमार गांधी, बांसा तारखेड़ा, पं. मुन्नालाल जैन, गंजबासौदा, श्रीमती सरला, मोरेना, श्रीमती अर्चना जैन, सागर, डॉ. अरिहंत जैन, मुंबई । संगोष्ठी में मुख्य अतिथि श्री गोपाल भार्गव, सहकारिता मंत्री - म.प्र. शासन, भोपाल थे।

संगोष्ठी का प्रथम प्रातःकालीन सत्र प्रो. अशोक कुमार जैन, वाराणसी के द्वारा मंगलाचरण पाठ से प्रारम्भ हुआ। अध्यक्षता श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष- डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर ने की। सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (अध्यक्ष-शास्त्रि परिषद) एवं प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन (पूर्व अध्यक्ष-विद्वत्परिषद) थे। विद्वानों द्वारा चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुरेन्द्र कमार जैन 'भारती' ने आचार्यश्री विद्यासागरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति नमन करते हुए कहा कि -

सागर सी गहराईयां, चिन्तन है अभिराम
त्याग तपस्या प्रकट है, चहुँदिशि में शुभनाम
प्रवचन पारंगत प्रभो, जन-जन के विश्राम
गुरुवर विद्या धाम को, शत-शत बार प्रणाम ।।

इसके पश्चात डॉ. श्रेयांस कुमार जैन ने श्रमण संत एवं विद्वान, डॉ. शीतलचन्द जैन ने समाज सुधार में विद्वानों की भूमिका, डॉ. जयकुमार जैन ने जैन विवाह पद्धति की प्रामाणिकता एवं व्यवहार्य बनाने की आवश्यकता विषय पर वक्तव्य दिये ।

द्वितीय सत्र प्रो. कमलेशकुमार जैन, वाराणसी की अध्यक्षता एवं प्रा. अभयकुमार जैन, प्रा. नेमिचन्द जैन, प्रो. फूलचन्द 'प्रेमी', प्रा. अरुणकुमार जैन, श्री अखिल बंसल (कार्याध्यक्ष-अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ) एवं प्रो. अशोक कुमार जैन के सारस्वतातिथ्य में प्रारम्भ हुआ। जिसमें प्रो. वीरसागर जैन ने जैन भाषा की दैनंदिन व्यवहार में आवश्यकता एवं उपाय, डॉ. अशोक कुमार जैन ने जैन धार्मिक आयोजनों का प्रयोजन-जैन संस्कृति का संरक्षण, डॉ. अनेकांत जैन ने श्रमण संघ परंपरा, श्री अखिल बंसल ने जैन परिवार और हमारा दायित्व, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' ने जैन परिवार परामर्श केन्द्र की आवश्यकता विषयक व्याख्यान दिये।

परम पूज्य मुनिश्री अजितसागर जी महाराज का मार्गदर्शन

संगोष्ठी में समागत विद्वानों एवं अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनिश्री अजितसागर जी महाराज ने कहा कि समय-समय पर आयोजित होने वाली संगोष्ठियों से जैनधर्म एवं दर्शन के मर्म को जाना जाता है। विद्वानों ने जिन विषयों पर अपने वक्तव्य दिये हैं वे सभी प्रयोजनीय हैं। हम सभी विद्वानों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने ज्ञान को चारित्र में ढाले और श्रमण संस्कृति को मजबूत बनाएं। हम सभी के लिए परमपूज्य गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का सानिध्य एवं मार्गदर्शन मिलना सौभाग्य की बात है।

परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का प्रेरक संबोधन

राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी में समागत विद्वानों एवं समस्त जैनाजैन समाज को संबोधित करते हुए आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि आज इस संगोष्ठी में सभी विद्वानों ने श्रम करके जो वैचारिक सामग्री एवं विचार रखे हैं वे उचित और शुभचिह्न हैं। यह कलिकाल-पंचमकाल है। हुण्डावसर्पिणीकाल है, अपवाद का पिटारा है। फिर भी ज्ञानांजनशलाकया कहा है अर्थात ज्ञान रूपी काजल का उपयोग करके सही दृष्टि पा सकते हो। आप अच्छी बात कर सकते हो किन्तु होना कठिन है। जैसे आप चाहते हैं कि हम सर्वज्ञ जैसे कहें । मेरी मान्यता

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

अपनी नहीं होती। हमें भी आगम के आलोक में कहना होता है। आप लोग भी जो लिखकर लाये हैं वे आगम के आलोक में लिखकर लाये हैं। आगम ही सही है। उसी से सही दिशा मिलती है।

आज यह प्रश्न उत्पन्न होने लगा है कि क्या जैनों के द्वारा कृषि हो सकती है? हाँ! अहिंसक कृषि हो सकती है। ऐसा आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी ने कहा है। यदि हमारे जैसा सभी सोच ले कि खेती में हिंसा होती है अत: हम तो नहीं करेंगे तो फिर और कौन करेगा? हमारा भरण-पोषण कैसे होगा? गृहस्थ के लिए तो कहा गया है कि उसे जो चीज चाहिए उसका उपार्जन वे स्वयं करें। मेरे गुरु आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने अपनी पुस्तक 'पवित्र मानव जीवन' में लिखा है कि-

अन वस्त्र यह दो चीजें मानव भर को आवश्यक हैं ।
विना अन के देखो भाई किसके कैसे प्राण रहें ।।
अन और कप.डा ये दोनों खेती से हो पाते हैं ।
इसीलिए खेती का वैभव हमें बुजुर्ग बताते हैं ।।
अगर अहिंसा माता के सेवक होने का चारा है ।
तो खेती को उन्नति देना पहला काम हमारा है ।।
खेती के करने से ही तो तृण कण के भण्डार भरे ।
कण की दरकार हमें तृण जहाँ हमारे बैल चरें ।।

आरंभ में हिंसा होती है किन्तु हिंसा करने का अभिप्राय नहीं है अत: जैनी कृषि (खेती) कर सकते हैं। आचार्य श्री ने 'पवित्र मानव जीवन' पुस्तक पढ़ने की सभी को प्रेरणा दी। आचार्यश्री ने कहा कि आत्मा भार रहित है। अतुलनीय है। मुनियों के लिए २८ मूलगुण आवश्यक एवं अपरिहार्य है। ना एक कम हो सकता है, ना एक ज्यादा। यदि कोई पूछता है कि भगवान नहीं है क्या? तो यह प्रश्न ही बता रहा है कि भगवान है क्योंकि प्रश्न कर्ता ने प्रथम पद भगवान ही रखा है। जो होता है उसी को आगे रखा जाता है। वर्तमान में जब चुनाव होते हैं तो एक माह के लिए आचार संहिता लागू कर दी जाती है। मैं पूछना चाहता हूं कि यदि आचार संहिता अच्छी है तो चुनाव होने के बाद साठ माह (५ वर्ष) के लिए इसे क्यों लागू नहीं किया जाता?

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि अपने यहाँ दान की व्यवस्था है। दान किसे दिया जाए? दान वस्तु क्या हो? दान का पात्र कौन है? यह सब देखा जाता है। दान के पात्र परिग्रही और अपरिग्रही दोनों होते हैं। किन्तु अतिथि वे कहलाते हैं जो परिग्रह और आरंभ से रहित हों। आदान-प्रदान बराबर अतिथि सत्कार माना गया है। उपकरण दान मात्र पिच्छी और कमण्डलु का दान ही नहीं है अपितु आवागमन, आवास, जल, प्रकाश आदि की सुविधा प्रदान करना भी उपकरण दान है। साधु तो लेने के निमित्त से आहार ग्रहण करने हेतु आता है और बदले में कुछ देकर चला जाता है। जैन मांगते क्यों नहीं हैं? यह प्रश्न उठता है। इसका उत्तर यही है कि हमारे यहां मांगने की प्रथा नहीं है। हम अतिथि (पात्र) से क्या पायेंगे? आचार्यश्री ने चुटकी लेते हुए मनोरंजक भाव से कहा कि हम तो निरंतराय पंगत कराते हैं अर्थात निरंतर ज्ञानदान देते हैं, अभय दान देते हैं, आशीर्वाद देते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो। आप लोगों का स्वाध्याय हमारे निमित्त से होता है। हमारे यहां कहा गया है कि त्यागी कौन? इसका उत्तर है जो पंचसूना से रहित है वह त्यागी है। जिन्होंने आरम्भ का त्याग किया है, जो परिग्रह के पहले होता है वे त्यागी हैं। आचार्यश्री समन्तभद्र ने कहा है कि -

नवपुण्यैः प्रतिपत्तिः सप्तगुणसमाहितेन शुद्धेन ।
अपसूनारम्भाणामार्याणामिष्यते दानम् ।।

अर्थात्द्व सात गुणवाला श्रावक, कुल, आचार एवं शारीरिक शुद्धि से सहित नव पुण्य कारणों के द्वारा / नवधाभक्तिपूर्वक पंचसूना तथा कृष्यादि आरंभ से रहित आर्यों / मुनीश्वरों, व्रतियों का आहारादिक से आदर/सत्कार करना दान शिक्षाव्रत कहा गया है।

पंचसूना के विषय में कहा है कि -

खंडिनी पेषणी चुल्ली उदकुम्भः प्रमार्जनी ।
पंचसूना गृहस्थस्य तेन मोक्ष न गच्छति ।।

अर्थात् जीवघात के स्थान/कार्य को सूना कहते हैं ये पांच हैं- खंडिनी/ओखली, प्रेषिणी/चक्की, चुल्ली/चौका चूल्हा, उदकुम्भी/जलघटी तथा प्रमार्जनी/बोहारिका । इनसे युक्त जीव मोक्ष नहीं जाता ।

यहां ध्यान रहे कि त्यागी-पात्र वे हैं जिनके पास कोई सामान नहीं है। मुनि पाणिपात्री होते हैं, करपात्री होते हैं। वे खड़े होकर, मौन होकर भोजन करते हैं। दंसण मूलो धम्मो का यही अर्थ है कि जिन लिंग का दर्शन होना चाहिए। द्रव्य लिंग के विना भावलिंग नहीं हो सकता। यह अन्तर्व्याप्ति है। आर्यिका भी वीरचर्या नहीं होती। दिगम्बर साधु निमंत्रण से आहारार्थ नहीं जा सकते। आगम में क्षुल्लक के लिए पात्र का विधान किया है किन्तु मुनि तो पाणिपात्री ही होगा। आज जरूरत कि हम शिथिलाचार को स्वीकार ना करें बल्कि जो आगम का विधान है उसे ही अपनाएं। हम अपना सकते हैं इसीलिए आगम में ऐसा विधान किया गया है।

आचार्यश्री ने श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के द्वारा विद्वत्संगोष्ठी के आयोजन की प्रशंसा की और कहा कि समय कम है किन्तु विद्वानों के लिए देने के लिए बहुत कुछ है।

प्रात:कालीन सत्र में आचार्यश्री ने जैन विवाह पद्धति की गुणवत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि जिस कन्या को हमारी जैन संस्कृति में शुभ माना गया है, दुहिता (मायका एवं ससुराल, दोनों का हित करने वाली) कहा है; उसे अपने माता-पिता की अनुमति के बिना अपने विवाह का निर्णय नहीं लेना चाहिए। तलाक या संबंध विच्छेद भारतीय संस्कृति नहीं है। परस्पर पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक बनें तथा दाम्पत्य जीवन को सुखमय व्यतीत करें, धर्म मार्ग का अनुसरण करें तो मानव जीवन हितकर बन सकता है। हमें पवित्र मानव जीवन की ओर बढ़ना चाहिए।

सम्पूर्ण संगोष्ठी का संचालन विद्वत्परिषद के महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' ने किया। सभी विद्वानों का सम्मान गढ़ाकोटा जैन समाज की ओर श्री रवीन्द्र अमरा, श्री राजेन्द्र जैन, श्री खेमचन्द जैन, श्री राकेशकुमार जैन, श्री अरुण मलैया, श्री निर्मल अठभैया, अशोक बांझल, उदय जैन ने शॉल, श्रीफल, मोमेन्टो, ग्रन्थ आदि से किया। संगोष्ठी में परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के समयसार पर दिये गये उपदेशों से युक्त समयोपदेश भाग-२ का विमोचन ब्र. विनय जैन, प्रतिष्ठाचार्य डॉ. जयकुमार जैन, डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, डॉ. अशोक कुमार जैन, डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' ने किया। ग्रन्थ का परिचय ब्र. डी. राकेश जैन ने दिया।

श्री अखिल बंसल ने डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल, अमलाई द्वारा लिखित 'मूलआम्नाय निबंधावली-१' डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, सनावद ने पार्श्व ज्योति, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' ने अपने नवीन काव्य-सुधोदय (जय परम सुधा काव्यम्), डॉ. फूलचन्द प्रेमी एवं डॉ. अनेकांत जैन ने 'पागद भासा' आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज एवं मुनिश्री अजितसागरजी महाराज को भेंट कीं। सभी विद्वानों ने श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी के दर्शन-अभिषेक एवं पूजन का लाभ उठाया।

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

गढ़ाकोटा में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 2015 तक श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं गजरथ महोत्सव का भव्य आयोजन - सानन्द सम्पन्न

महान पुण्योदय नगरी गढ़ाकोटा (मध्यप्रदेश) में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी विद्यमान है। यहां आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा दीक्षित मुनिश्री गुप्तिसागरजी महाराज, मुनिश्री अजित सागरजी महाराज, ऐलक सिद्धांत सागरजी महाराज एवं आर्यिका आगतमती माता जी तथा अन्य आचार्य से दीक्षित मुनि प्रार्थना सागरजी महाराज विद्यमान हैं। यहाँ 250 वर्ष बाद उपरोक्त आचार्य भगवंत के सान्निध्य में हजारों धार्मिक भक्तों के बीच यह भव्य अनुष्ठान सानन्द सम्पन्न हुआ। गढ़ाकोटा धर्म नगरी के गौरव में श्रमण संस्कृति के उन्नयन में उपाध्याय श्री गुप्ति सागर जी महाराज, मुनिश्री अजित सागरजी महाराज एवं ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज का महान योगदान रहा है। इन सभी के सान्निध्य में गढ़ाकोटा में एक गौरवशाली इतिहास रचा गया है जो युग-युगान्तरों तक स्मरण किया जायेगा।

इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पुण्यार्जक

माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया		: ध. श्री जिनेश सोंधियाजी एवं श्रीमती माया सोंधियाजी
सौधर्म इन्द्र	,, ,,	: श्री राकेश कुमार एवं श्री राजेश कुमार हरदी वाला परिवार
धनपति कुबेर	,, ,,	: श्री रवीन्द्र कुमार राहुल कुमार उमरा परिवार
महायज्ञ नायक	,, ,,	: श्री राजेन्द्र कुमार जी उमरावाले
भरत चक्रवर्ती	,, ,,	: श्री अरुण कुमार आशीष कुमार मलैया
बाहुबली	,, ,,	: श्री पवन कुमार (भीलवाड़ा)
राजा श्रेयांस	,, ,,	: श्री अनिल कुमार उमरा वाले

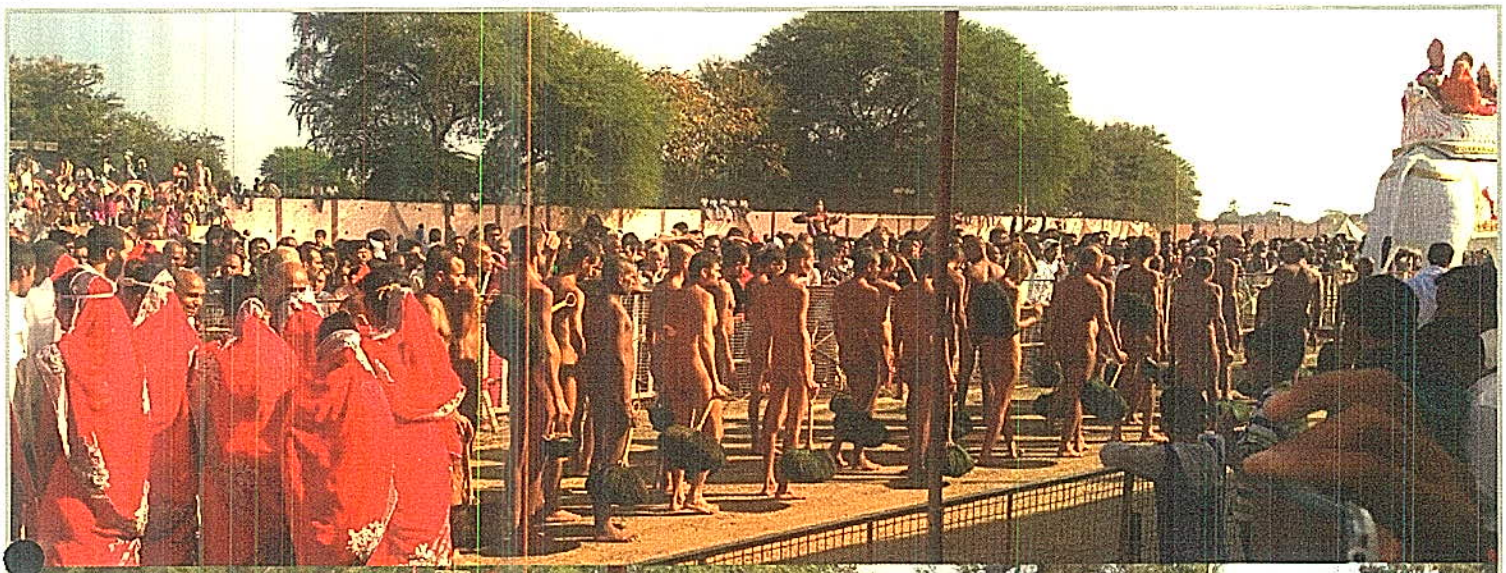

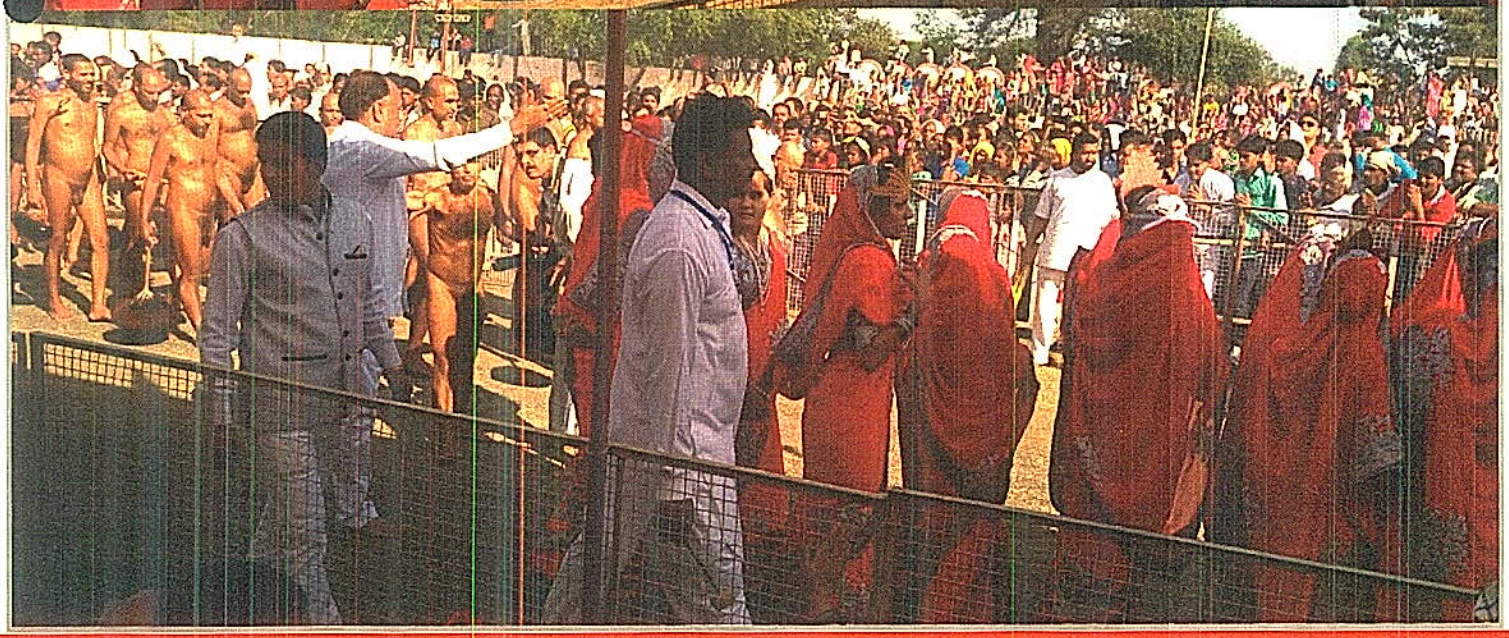

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

भव्य त्रय गजरथ महोत्सव की अनमोल झलकियां : गढ़ाकोटा (म.प्र.)

सानिध्य : संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ससंघ

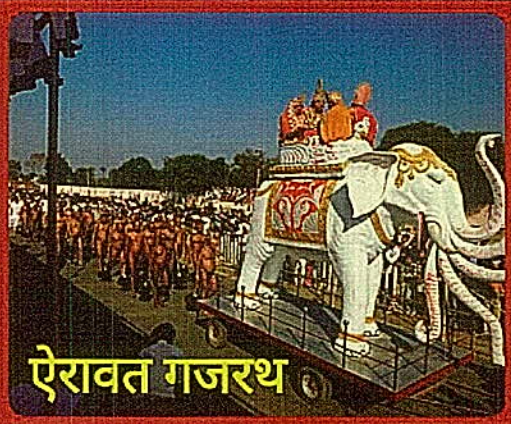
ऐरावत गजरथ

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ

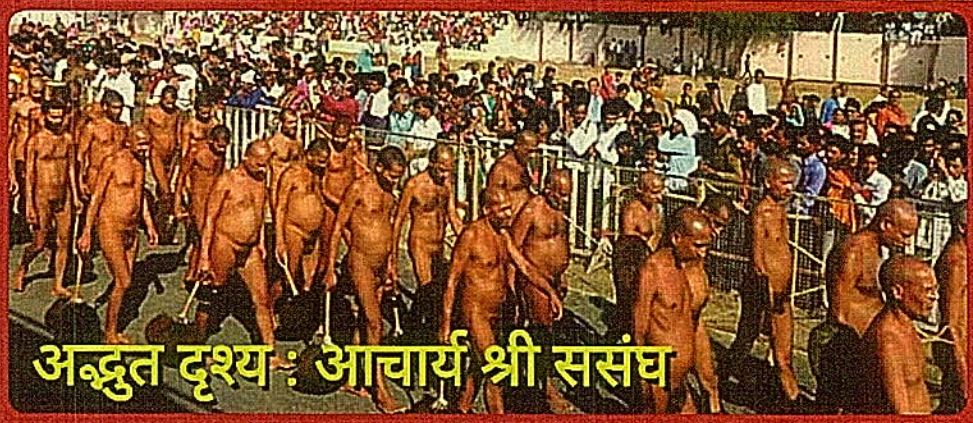
अद्भुत दृश्य : आचार्य श्री ससंघ

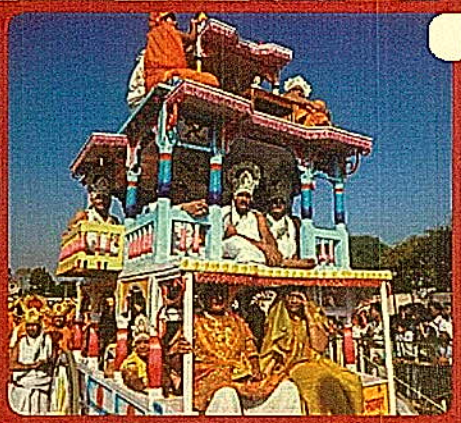

NETWORK से जुड़ने के लिए 'Add Me' लिखकर WhatsApp पर भेजें : 08941955502

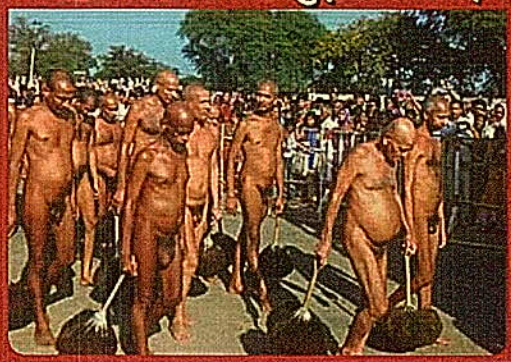

इंद्र-इन्द्राणी

रथयात्रा में उपस्थित जन समुदाय

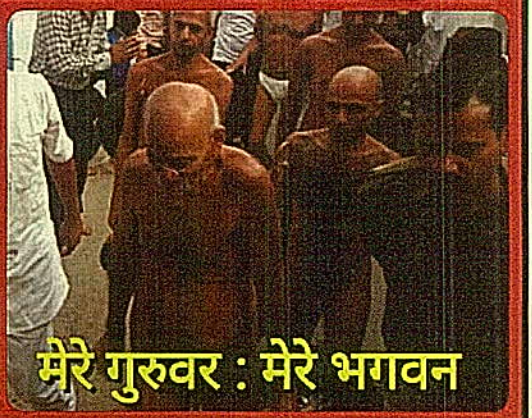
मेरे गुरुवर : मेरे भगवन

पैसे से सुख कभी खरीदा नहीं जाता, और दु:ख का कोई खरीदार नहीं होता

शराब पर पूर्ण प्रतिबंध करने के लिए बिहार सरकार को हार्दिक बधाई

1 अप्रैल, 2016 से बिहार राज्य में शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध किये जाने की जो घोषणा माननीय मुख्यमंत्री श्री नितिश कुमार जी ने की है उसके लिए समग्र जैन समाज इस भागीरथी निर्णय के लिए बिहार राज्य सरकार को हार्दिक बधाई देती है। इस निर्भीक निर्णय से समूचे बिहार की जीवनधारा को न केवल सुखी जीवन देगी अपितु उनका शांतिपूर्ण जीवन चमकेगा।

बिहार राज्य जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की बिहार भूमि है। वहाँ की पवित्र भूमि के कण-कण में जैन संस्कारों का समावेश है। सरकार का यह प्रयास इस भूमि के संस्कारों को पुनर्जीवित करने वाला सिद्ध होगा साथ ही साथ सम्पूर्ण राष्ट्र को नई दिशा देने वाला होगा। भारत की संपूर्ण जैन समाज व साधु, साध्वी आपके निर्णय का स्वागत करती है। मानवता की रक्षा के प्रयास के लिए अपनी शुभकामनाएं देती है।

सुधीर जैन/राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रो. फूलचन्द प्रेमी जैन विश्व भारती संस्थान में एमरेट्स प्रोफेसर नियुक्त

सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी के जैन दर्शन विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा वर्तमान में भोगीलाल लहेरचंद इंस्टिट्यूट ऑफ इंडोलोजी, दिल्ली के निदेशक (शैक्षिक) प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) ने एमरेट्स प्रोफेसर के पद पर एकडेमिक काउंसिल की अनुशंसा पर कुलपति महोदया ने नियुक्त किया है। प्रो. प्रेमी दिल्ली में रहकर मानद रूप से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग के अंतर्गत शैक्षणिक गतिविधियों में शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन करेंगे तथा समय-समय पर विश्वविद्यालय जाकर अपने ज्ञान एवं दीर्घ अनुभवों से विभाग का पथ प्रदर्शन करेंगे। ज्ञातव्य है कि प्रो. प्रेमी मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित संस्कृत आयोग में प्राकृत भाषा हेतु सदस्य भी मनोनीत किये गए हैं। आपने सन् 1976 में जैन विश्व भारती से ही जैन विद्या एवं प्राकृत के प्राध्यापक के रूप में अध्यापन की शुरुआत की थी।

- डॉ. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

Photos of flood relief materials distributed by Smt Sarita M K Jain and Shri Kamal ji Tholia on behalf of Bharat Varshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee. Total 1000 families from Thiruvalur and Arkonam were benefited from this.

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कोठाला को सम्बद्धता प्रमाण पत्र देते हुए क्षेत्र के विश्वस्त सर्वश्री बजरंग व्यवहारे, माणिकचंद कासलीवाल, महाराष्ट्र अंचल के महामंत्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष मनोज साहुजी, मंत्री विपिन कासलीवाल, केतन ठोले एवं अमित काला।

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वगिरि कासन गाँव में भ. आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ का भव्य आयोजन

Sudhir Jain with Governor Of haryana Hon'ble Kaptan Singh Solanki and Upadhyai Shri 108 Gupti Sagar Ji Muniraj.

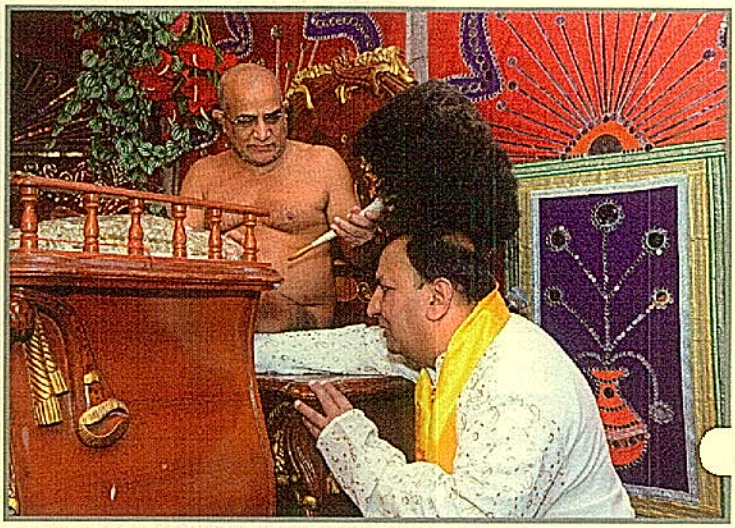

Rajeev Jain - Preet Vihar, DELHI.

Rajesh Solanki (Son oh Hon'ble Gov.) and others.

D.K Jain - Nirman Vihar - DELHI.

संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती मनोज्ञ मुनि शिष्य राष्ट्रसंत शाकाहार प्रवर्धक महायोगी उपाध्याय मुनि 108 गुप्तिसागर जी मुनिराज की पावन प्रेरणा एवं मंगल सान्निध्य में दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वगिरि कासन (निकट मानेसर), जिला - गुड़गांव (हरियाणा) में श्री 1008 भगवान आदिनाथ जिनबिंब की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ का भव्य आयोजनं 26 नवम्बर से 30 नवम्बर तक महती धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 28 नवम्बर 2015 को दीक्षा कल्याणक में मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा के राज्यपाल माननीय प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, कटनी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे।

कासन गांव में 18 वर्ष पूर्व भूगर्भ से एक बड़े घड़े से कुछ रत्नों की मूर्तियां निकली थी जिनका शुद्धिकरण कर यहां एक चैत्यालय में विराजमान कर

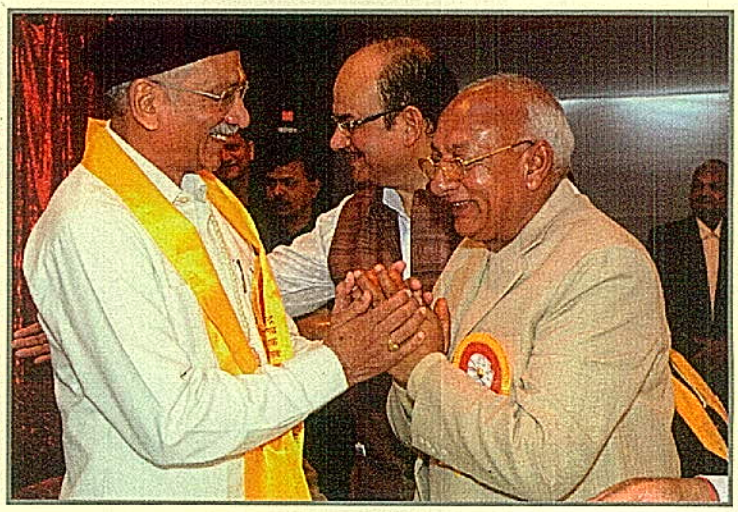

Rakesh Jain - GURGAON.

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

दिया गया था। सन् 2007 में भगवान आदिनाथ की अति प्राचीन मूर्ति को छोड़कर शेष रत्नों की मूर्तियां चोरी हो गई। जो बाद में बरामद भी हुई, परन्तु 2014 में पुनः उनकी चोरी हो गई है, जिसका अभी तक कोई पता नहीं लग सका है। इससे समाज में असंतोष एवं रोष का वातावरण व्याप्त है।

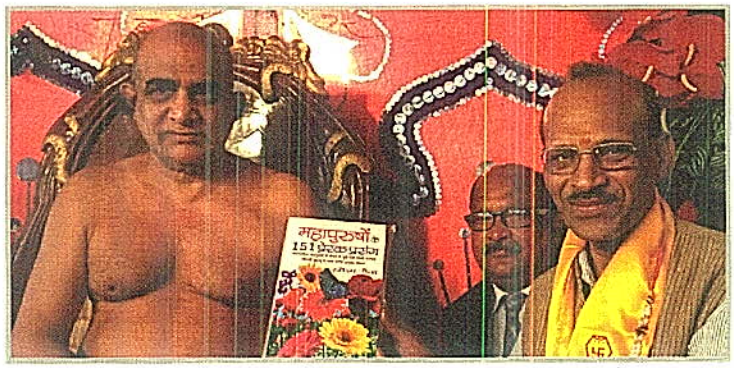

गुप्तिसागरजी महाराज के सान्निध्य में पुस्तक का विमोचन

Sudhir Jain With Deepak Jain(Chairman KASAN) , Hon'ble Governor & others.

परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी के जीवन पर आधारित सचित्र संकलन 'संकेत' का विमोचन :

पूज्य 105 आर्यिका उपशांतमति माताजी के सान्निध्य में कटनी चातुर्मास के उत्तरार्ध में, शरद पूर्णिमा के दिन विमोचन करते हुए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सिं. श्री सुधीर कुमार जैन, सेठ श्री उत्तमचंद जैन, दयोदय गौशाला कटनी के अध्यक्ष श्री प्रेमचंद प्रेमी, महा पंचायत अध्यक्ष- श्री संतोष कुमार जी एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री प्रमोद कुमार जैन (संचालन करते हुए)

'सुधोदय' का विमोचन

भीलवाड़ा, राजस्थान में आचार्य श्री विद्यासागर वाटिका में दिनांक 25 अक्टूबर, 2015 को परमपूज्य मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के जीवन पर हिन्दी कवि कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती' (बुरहानपुर) के द्वारा रचित तथा डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन (सनावद) के द्वारा संपादित 'सुधोदय' (जय परम सुधा काव्यम्) का विमोचन कृति के पुण्यार्जक श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के ट्रस्टी श्री ज्ञानेन्द्र गदिया-श्रीमती मधु गदिया, श्री नीरज गदिया-श्रीमती मोनिका गदिया ने किया। उक्त प्रबंध काव्य के भाव एवं रचना पक्ष की जानकारी देते हुए श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन ने कहा कि यह संत चरित्र पर लिखा गय श्रेष्ठ प्रबंध काव्य है जो यथार्थ के धरातल पर लिखा गया है तथा अतिरंजना से दूर है। मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने के लिए डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' द्वारा दिया गया यह अनुपम काव्य-उपहार है।

- प्रियम् जैन, सनावद
प्रवक्ता-जैन धर्म प्रचार-प्रसार आंदोलन

विज्ञापन

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि क्षेत्र, ता. भूम, जिला- उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) पर बहुत संख्या में दर्शन हेतु यात्रीगण आते हैं और साल भर अनेक शैक्षणिक यात्रासंघ आते रहते हैं । आने वाले यात्रियों के नाश्ता, चायपान, भोजन आदि हेतु एक भव्य कैन्टीन इमारत बनाई गई है । यह कैन्टीन भाड़े पर चलाने हेतु देना है । इच्छुक और अनुभवी व्यक्ति नीचे दिये पते पर दिनांक 15/01/2016 तक आवेदन पत्र भिजवाने की कृपा करें -

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि
मु.पो. कुंथलगिरि- 413 503
ता. भूम, जिला- उस्मानाबाद (महा.)
मो. 09822459279 / 9130093347
E-mail: kulbhushandeshbhushan2008@gmail.com

महंगी से महंगी घड़ी पहन कर देख ली, वक्त फिर भी मेरे हिसाब से कभी न चला

पावापुरी में आचार्य विद्यासागर भवन का उद्घाटन समारोह

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावापुरी (नालन्दा) बिहार - आज दिनांक 9/11/2015 को बिहार स्टेट दिगम्बर जैन कमेटी के अंतर्गत पावापुरी जी सिद्धक्षेत्र पर त्रिदिवसीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के पहले दिन आचार्य विद्यासागर भवन का उद्घाटन नालन्दा के सांसद श्री कौशलेन्द्र कुमार जी एवं राजगीर विधानसभा क्षेत्र के नव निर्वाचित विधायक श्री रवि ज्योति जी ने संयुक्त रूप से फीता (रिवन) काट कर किया। यह समारोह मुरैना (म.प्र.) से आये विधानकर्ता पं. श्री मुकेश शास्त्री के दिशा-निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मानद् मंत्री श्री अजय कुमार जैन, पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्र प्रसाद 'तरुण', राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत शिक्षक श्री जयनन्दन पाण्डेय, जदयू के जिलाध्यक्ष श्री सियाशरण ठाकुर, उपाध्यक्ष श्री विजय जी, श्री बालमुकुन्द यादव एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों के अलावा स्थानीय जनता के साथ बाहर से आये तीर्थ यात्री भी उपस्थित थे। कमेटी के अन्य क्षेत्रों से प्रतिनियुक्ति पर आये प्रबंधक एवं उपप्रबंधक भी मौजूद थे।

आधुनिक शैली में बने इस विद्यासागर भवन में कुल 31 कमरे अटैच्ड बाथरूम बनाये गये हैं। इस भवन में लिफ्ट लगाने की भी योजना है। इस

भवन के निर्माण से पावापुरी में आने वाले तीर्थयात्रियों को काफी सुविधा होगी।

- डॉ. वीरेन्द्र सिंह
निर्देशक- आचार्य महावीर कृति दिगम्बर जैन सरस्वती भवन, राजगीर (नालन्दा) बिहार

सोने का महासागर भारत
मैकाले ने देखा

'मैं भारत के कोने-कोने में घूमा हूँ और मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा दिखाई नहीं दिया, जो भिखारी हो, चोर हो। इस देश में मैंने इतनी धन-दौलत देखी है, इतने ऊँचे चारित्रिक आदर्श और इतने गुणवान मनुष्य देखे हैं कि मैं नहीं समझता कि हम कभी इस देश को जीत पाएंगे, जब तक कि उसकी रीढ़ की हड्डी को नहीं तोड़ देते, जो है इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत। इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूं कि हम इसकी पुरातन शिक्षा व्यवस्था, उसकी संस्कृति को बदल डालें, क्योंकि यदि भारतीय सोचने लगे कि जो भी विदेशी है और अंग्रेजी हैं, वह अच्छा है और उनकी अपनी चीजों से बेहतर है, तो वे अपने आत्मगौरव और अपनी ही संस्कृति को भुलाने लगेंगे और वैसे बन जाएंगे जैसे हम चाहते हैं - एक पूरी तरह से दमित देश। यह योजना प्रस्ताव २ फरवरी १८३५ को ब्रिटिश संसद के समक्ष पेश किया गया था।

भारत महान्

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

हजारों भक्तों ने किए भगवंत के दर्शन

यात्रा महोत्सव का मुख्य महामस्तकाभिषेक उत्साह से सम्पन्न

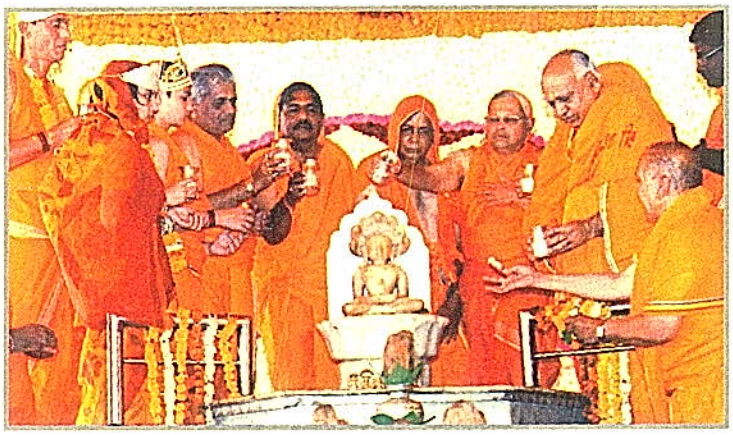

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर जी में 24 नवम्बर से शुरू हुए वार्षिक यात्रा महोत्सव के दूसरे दिन भी सुबह से ही पैदल आने वाले हजारों भक्तों ने मूलनायक श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवंत के दर्शन किए। इस समय क्षुल्लक जिनदत्तसागरजी महाराज की प्रमुख उपस्थिति थी।

सबसे पहले सुबह महामस्तकाभिषेक की बोलियां होकर चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवंत का मुख्य पंचामृत महाशांतिधारा करने का सौभाग्य श्री सुनील कुमार सुंदरलाल पाटणी परिवार अंधारीवाला को मिला। इंद्र-इंद्राणी होने का मान श्री ओमप्रकाश सुरेन्द्रकुमार, नरेन्द्र कुमार पहाड़े परिवार जालना को मिला। दुग्ध अभिषेक सर्वश्री सुन्दरलाल, सुनील कुमार, भावेशकुमार प्रीतम कुमार पाटनी परिवार को मिला। आमरस अभिषेक सर्वश्री बबनलाल ललितकुमार, शैलेषकुमार पाटनी परिवार की ओर से किया गया। भगवंत का अर्चनाफल श्री प्रमोद कुमार जमनलाल कासलीवाल, श्री मनोजकुमार दुलिचंदसा साहुजी, श्री सुनीलकुमार सुंदरलाल पाटनी आदि को मिला। पूरे महामस्तकाभिषेक णमोकार भक्तिमंडल द्वारा सामूहसंगीत में हुआ। उपस्थित सभी समाजभाईयों को परम गुरुभक्त सर्वश्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, मनोज कुमार साहुजी, सुनील कुमार पाटनी परिवार की ओर से पांच दिन महाप्रसाद का आयोजन किया गया है। सुबह 6.00 बजे से ही भक्तों की लंबी कतारें दर्शन के लिए लगी हुई थी। यात्रा महोत्सव में गुरु परिवार की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कचनेर गांव जैन धर्मियों का दक्षिण काशी के रूप में प्रसिद्ध है। यहां भक्तों की मनोकामना पूरी करने वाली मूर्ति है। दर्शन लेकर भक्त मंत्रमुग्ध हो जाते हैं व मन को अत्यन्त शांति मिलती है, ऐसा भक्तों का मानना है।

यात्रा महोत्सव के समारोह में मुंबई उच्च न्यायालय के न्या. सौ. इंदिरा जैन, न्या. कैलास चांदीवाल, जिलाधिकारी निधि पांडेय, सांसद चंद्रकांत खैरे, महापौर त्र्यंबक तुपे, विधायक अतुल सावे, दिलीप घेवारे, जिलाप्रमुख अंबादास दानवे, नंदकुमार घोड़ेले, जिप सदस्य राठोड़, प्रांत अधिकारी शशीकांत हदगल, प्रा. दिलीप खैरनार, सरपंच बालाप्रसाद जाधव आदि ने उपस्थित रहकर भगवंत के दर्शन किए।

यात्रा महोत्सव को सफल बनाने के लिए मंडल अध्यक्ष सर्वश्री डी.यू.जैन, उपाध्यक्ष माणिकचन्द गंगवाल, व्यवस्थापकीय संचालक सुरेश कासलीवाल, विश्वस्थ केशरीनाथ जैन, संजय कासलीवाल, प्रकाशकाका पाटनी, महेन्द्र काले, कार्यकारिणी मंडल अध्यक्ष प्रमोद कासलीवाल, सचिव भरत ठोले, सदस्य ललित पाटनी, दिलीप काला, महावीर सावजी, सहसचिव मनोज सावजी, उपाध्याय धरमचंद पहाड़े, अशोक गंगवाल, एड. एमआर बड़जाते, नितिन गंगवाल, सुहास चुडीवाल, संतोष कासलीवाल, सुरेशकुमार पहाड़े, किरण मास्टर, अजमेरा, पीयूष कासलीवाल, अनूप पाटनी सहित शिक्षकवृंद व क्षेत्र के कर्मचारी वर्ग सहित ग्रामवासियों ने परिश्रम किया।

- देवेन्द्रकुमार काला, औरंगाबाद

गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध ही समस्या का हल : मुनि पुलक सागरजी

जब तक देश में गौवध पर पाबंदी नहीं लग जाती, तब तक हमारा संघर्ष अधूरा ही है। गौमांस भक्षण को लेकर देश में उपजे विवाद का मेरी राय में एकमेव निराकरण यही है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करके गौहत्या पर सख्ती के साथ पूर्ण रूपेण पाबंदी लगा दी जाए। हालांकि मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात जैसे कई राज्यों में गौवध पर प्रतिबंध है लेकिन पश्चिम बंगाल और केरल जैसे राज्यों से आए भक्त मुझे बताते हैं कि उनके राज्यों में खुलेआम दुकानों पर गौमांस बिकता है। हम यह स्वीकार नहीं कर सकते। गौहत्या पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध लगना ही चाहिए। देश की वर्तमान सरकार खुद को भारतीय जीवन-मूल्यों और संस्कृति की संवर्धक और रक्षक मानती है तो यह काम अभी ही हो जाना चाहिए, इससे अच्छा सुअवसर बाद में शायद ही आए। गौमांस भक्षण को न्यायोचित और अपना मौलिक अधिकार बताने वालों से मैं फिर एक बार आग्रह करूंगा कि वे समाज में रहने वाले अपने अन्य भाईयों की भावनाओं का ध्यान रखें, उनके विश्वास व आस्था का सम्मान करें और ऐसा कोई भी कृत्य न करें जिससे समाज में वैमनस्यता का वातावरण निर्मित हो। हम तो अहिंसा के पथ पर चलने वाले हैं, इसलिए यही कहेंगे कि सिर्फ गौमांस ही नहीं बल्कि किसी भी जीव का मांस खाना धर्म विरुद्ध है। मुझे विश्वास है कि मेरी इस सलाह का समाज के सभी वर्गों पर प्रभाव होगा।

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन संस्थान, अतिशय क्षेत्र (सराफा) नांदेड़

परिचय

नांदेड़ जिले को प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति की पहचान है। इस जिले में बहुत सी जगह प्राचीन मंदिर, वास्तु, मूर्तिशिल्प एवं शिलालेख मिलते हैं। इस जिले के भूभाग पर सात वाहन, वाकाटक, बदामी के चालुक्य, राष्ट्रकुट, कल्याणी के चालुक्य एवं देवगिरि के यादवों ने राज्य किया है। इन सभी राजघराने के राजाओं के कार्यकाल में जैन मंदिर, जैन मूर्तियां बड़ी तादात में बनाई गयी हैं। राष्ट्रकुट, कल्याणी के चालुक्य एवं देवगिरि के यादवों ने जैन धर्म को राजाश्रय दिया था। इनके कार्यकाल में नांदेड़ जिले के अंतर्गत कंधार, करडखेड, लहान, अर्धापुर, दाभड, कलंबर, नांदेड, मानसपुरी, बहादरपुरा, जुन्नी होटल, मुखेड, सगरोळी, चेनापुर आदि अनेक जगहों पर प्राचीन जैन मंदिर और मूर्ति शिल्प है जिससे जैन समाज परिचित नहीं है, ऐसे मूर्ति शिल्पों का हमने संशोधनात्मक ऐतिहासिक परिवेश में उसका सूक्ष्म अवलोकन किया है।

ई.सं.८वी से १०वीं शताब्दी तक राष्ट्रकुट घराने का साम्राज्य था। राष्ट्रकुट घराने का राजा दंतिदुर्ग उसका बेटा अमोघवर्ष का बेटा कृष्ण पहला, कृष्ण दूसरा, कृष्ण तीसरा इन सब राजाओं का उल्लेख कंधार के शिलालेख में अंकित है। इनके कारकीर्द में जैन साहित्य, जैन विद्वान पंडित, जैन आचार्य, भट्टारक इन्हें सुवर्ण युग प्राप्त हुआ था। जैन आचार्य, जैन साहित्य को राष्ट्रकुट राजघराने का राजाश्रय मिलता था। राष्ट्रकुट राजा अमोघवर्ष आचार्य जिनसेनजी को अपना गुरु मानते थे और अपना पुत्र कृष्ण द्वितीय को आचार्य जिनसेनजी के शिष्य अ. गुणभद्रजी के पास पढ़ाया था। जैन धर्म को उदार राजाश्रय देने की वजह से उस समय जैन धर्म का बहुत प्रचार-प्रसार विकास हुआ। जैन मंदिर मूर्तियों की निर्मिती एवं साहित्य लेखन बड़ी तादात में हुआ। जैन धर्म के लिए राष्ट्रकुटों की साम्राज्यसत्ता एक सुवर्णयुग की समान थी। राजा अमोघवर्ष ने संघर्ष के बजाय धर्म को राजाश्रय दिया। उमर के अंतिम पड़ाव में उन्होंने जैन मुनि दीक्षा लेकर संन्यास मरण स्वीकार किया।

आ. जिनसेनजी के शिष्य आ. गुणभद्र, आ. गुणभद्र के शिष्य बंकेश्वर का उल्लेख कंधार के शिलालेख में देखने को मिलता है। बंकेय ने बंकेश्वर मंदिर का निर्माण कराया और उनकी भार्या ने छल्लेश्वर मंदिर बनवाया। वह मंदिर अभी २०११ में जो बाहुबली की ७ फीट ऊँची प्रतिमा खण्डित अवस्था में मिली है उसे जुड़ाकर खड़ा किया तो कर्नाटक के श्रवणबेलगोला के बाहुबली की प्रतिमा का प्रतिरूप दिखाई देती है। साथ में आदिनाथ भगवान की भी खंडित मूर्ति मिली है। इसलिए अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ पर कामदेव मंदिर होना चाहिए, जैन परंपरा में बाहुबली को कामदेव के नाम से जाना जाता है, शिलालेख में कामदेव का उल्लेख है।

इन सभी ऐतिहासिक दस्तावेज के आधार पर आ. जिनसेन, आ. गुणभद्र बंकेश्वर इनके पावन पुनीत आगमन से नांदेड जिला मानो पवित्र हो गया। उनका कुछ समय अर्धापुर, कंधार, नांदेड यहां पर वास्तव्य रहा होगा। क्योंकि जैन मुनि निरंतर फिरते रहते हैं वे एक ही जगह पर नहीं रहते। उन्होंने इस परिसर में एवं एलोरा, मान्यखेट के परिसर में रहकर आदिपुराण, उत्तरपुराण, पार्श्वभ्युदय इन ग्रंथों की रचना की होगी। इन ग्रंथों में नांदेड जिले की अधिकांश पहचान दिखाई देती है।

उपरोक्त प्राप्त साधन सामग्री से अर्धापुर में जो केशवराज मंदिर है वहां पर आज भी खंडित-अखंडित जैन मूर्तियां खुली बिखरी है। पास में ही एक शिलापट है। उस पर भ. मल्लिनाथ, वृषभ (आदिनाथ) जिनवानी के नाम उत्कीर्ण है । आज जो मूर्ति अर्धापुर में खंडित अवस्था में है वह वैसे ही है। मल्लिनाथ की मूर्ति शिरडशहापुर को गई। दंतकथा किंवदंती अनुसार एक मूर्ति तीर्थंकर आदिनाथ जी की अर्धापुर से बैलगाड़ी में बैठाकर नांदेड में सराफा प्रभाग में स्थानापन्न हुई है। इस मूर्ति की ऊँचाई पांच फीट काले पाषाण की अर्धपद्मासन है। मूर्ति के पीछे भामंडल है कुरळे घुंघराले बाल गर्दन पर लटक रहे हैं। श्रीवत्स चिह्न अंकित है यह मूर्ति आदिनाथ जी की है। लांछन दिखाई नहीं देता। कंधार में मिली आ. जिनसेन जी आ. गुणभद्र जी की चरण पादुका पीछी कमंडलु इससे अनुमान लगाया जाता है। आ. जिनसेनजी नांदेड आये होंगे उनके ही कर-कमलों द्वारा इस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हुई होगी। यहाँ मूर्ति ९वीं शताब्दी की होगी, ऐसा अनुमान है। इस मूर्ति के प्राचीनता का कयास हमने उपरोक्त साधन संपदा एवं वृद्ध अनुभवी लोगों ने कथित की दंतकथा अनुसार यह मूर्ति अतिशय युक्त त्रिकालरूप दर्शनीय है। मैंने आदिनाथजी के मंदिर में बैठकर प्रार्थना की एवं संकल्प लिया कि मैंने जो नांदेड के आदिनाथजी का चालीसा लिखा, अगर यह लिखा हुआ सच होगा तो नांदेड अतिशय क्षेत्र होगा। चालीस दिन चालीस पढ़ा चमत्कार चालीसा पठन से ये हुआ ३९ वें दिन प्रज्ञाश्रमण देवनंदीजी ने हमारे बताये हुए नांदेड के ऐतिहासिक दस्तावेज को देखकर सिद्धक्षेत्र गजपंथा से १९.११.२०१० को नांदेड अतिशय क्षेत्र घोषित किया एवं ४०वें दिन अध्यक्ष के हाथ में नांदेड अतिशय क्षेत्र का हस्ताक्षरित पर्चा दिया। २०१२ में तीर्थरक्ष कमेटी ने भी नांदेड अतिशय क्षेत्र को संलग्नता प्रदान की। यह मूर्ति मनमोहक आकर्षक रंगछटा को लिये हुए है इस मूर्ति के दर्शन से भक्तों को परम शांति का अनुभव आता है। नया कार्य करने को ऊर्जा मिलती है। प्रति सोमवार को भक्तों की यहां पर भीड़ लगी रहती है। नांदेड आदिनाथ चालीसा पठन से कई भक्तों के कार्य

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

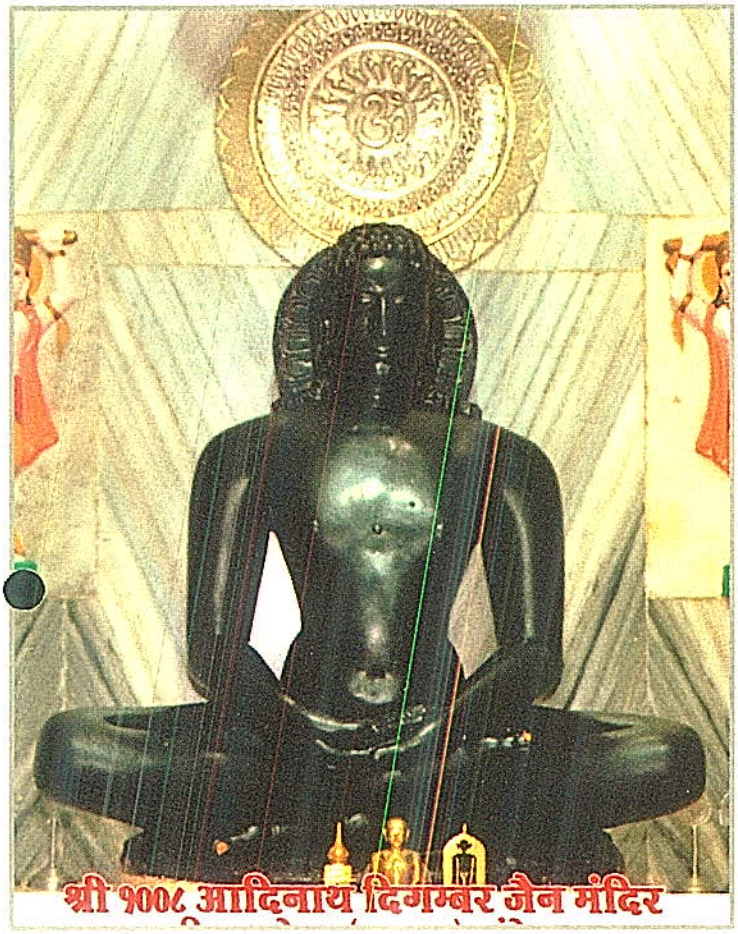

सफल हुए हैं ऐसा उन्होंने हमें लिखित स्वरूप में बताया है। बड़ी पावन सकारात्मक ऊर्जा का यहाँ पर हमेशा संचार होता है। श्रीफल चढ़ाने से मनोकामना पूरी होती है ऐसा भक्तों ने अनुभव किया है।

आदिनाथ जयंती को यात्रा महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस मंदिर में और भी ५०० साल पुरानी जीवराज जी पापड़ीवाल द्वारा बनवाई गई २०-२५ प्रतिमा इस मंदिर मे है । सुपार्श्वनाथ भगवान की उल्टे स्वस्तिक चिह्न की प्रतिमा भी है। आदिनाथ भगवान के दोनों पार्श्व भागों में एक पार्श्वनाथ जी की छोटी प्रतिमा ग्रे कलर के पाषाण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक प्रभावशाली हैं। दूसरी काले पाषाण में तीन खडगासन छोटी-छोटी प्रतिमा एक फीट के पाषाण में है। आदिनाथजी के मूर्ति पर कार्यकाल लिखा हुआ नहीं है। फिर भी यह मूर्ति प्राचीन है। इस मूर्ति की कलात्मकता राष्ट्रकुट कालीन मूर्ति शिल्प का प्रतिबिंब है। इस प्रकार की अनेक मूर्तियां कंधार एलोरा की जैन गुफाओं में, शिरडशहापुर, अर्धापुर को देखने को मिलती है।

नांदेड के उत्कर्ष विकास के लिए आदिनाथजी की मूर्ति यह प्राचीन एवं संबल प्रदान करने वाली ऐतिहासिक मूर्ति गोदावरी नदी के परिसर में नंदीग्राम नगरी नांदेड को वैभव सम्पन्नता शांति का संदेश प्रदान करने वाली है।

- डॉ. सौ. अरुणा रवीन्द्र काला, नांदेड़

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संरक्षक सदस्य

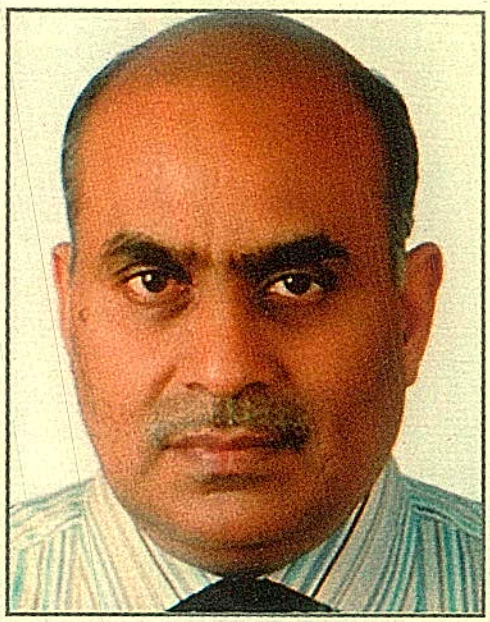

श्रीमती चिंतामणि सवाईलाल जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई-कन्नौज
प्रतिनिधि : श्री प्रभातचन्द्र जैन, मुंबई

श्री राजेन्द्रकुमार शामलाल जैन
गन्नौर, हरियाणा

सम्माननीय सदस्य

श्री राजेन्द्रकुमार दयाचन्द जैन
जगराओ

श्री पियुषकुमार जैन
आगरा

आजीवन सदस्य

श्री प्रमोद कुमार फूलचन्द पाटनी,
औरंगाबाद

श्री रोहित कुमार भागचन्द्र जैन,
कटनी

श्री रजत कुमार राजेन्द्र कुमार जैन,
रामपुर

श्री बाहुबली हिराचंद बोपलकर,
औरंगाबाद

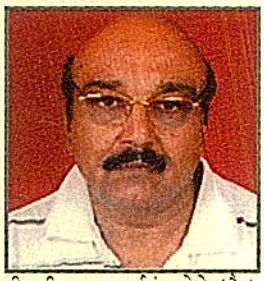

श्री प्रदीप कुमार धर्मचंद ठोले (जैन),
सटाणा (नाशिक)

आजीवन सदस्य

श्री शरतकुमार केवलचंद गंगवाल, अन्नानगर

श्री ब्रिजेश कुमार नवनीतलाल दोशी, हिम्मतनगर

श्री राजेश धरमदास जैन, पुणे

श्री अनंतकुमार हंसकुमार जैन, मुरादाबाद

श्री अभिनंदन कुमार हंसकुमार जैन, मुरादाबाद

श्री विनोद कुमार सुगनचंद जैन, त्रिवेल्लूर

श्रीमती चन्द्रा राजकुमार जैन (सिंघई), बीना (इटावा)

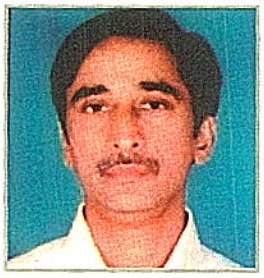
श्री कमलेश अरविन्दभाई गांधी, सलाल

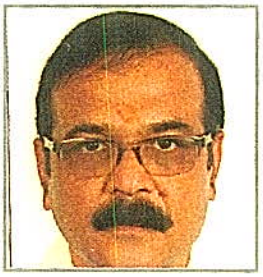
श्री राजेश ज्ञानचन्द पाटनी (जैन), हैदराबाद

श्री अशोक श्रीनिवास बड़जात्या, चेन्नई

श्री प्रकाशकुमार अभयकुमार जैन (दज), कोटा

श्री संदेश सुपुत्र श्री बी.एल.जैन, कटनी

श्री स्वप्निल सुबोधकुमार देशमुख, नंदगांव पेठ

श्री रमेशचंद सोहनलाल जैन, नई दिल्ली

श्री महावीरलाल जोतमनजी जैन, मुंबई

श्री अनुज अनिलकुमार जैन, गोटेगांव

श्रीमती आशा विमलचंद जैन, गोटेगांव

श्रीमती उमारानी ध.प.आर.के.जैन, गोटेगांव

श्री संजीवकुमार ज्ञानचन्द जैन, गोटेगांव

श्री आशीष अशोक कुमार जैन, गोटेगांव

श्री रुपेशकुमार रतनचंद जैन, गोटेगांव

श्री आशीष कुमार कुन्दनलाल जैन, अशोकनगर

श्री संदीप नेमचंद जैन, सतना

श्री प्रमोद नेमीचंद जैन, सतना

श्री सुनील जयंत शाह, सातारा

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ॥ (पं. राजमल पवैया)

आजीवन सदस्य

श्री महावीर ज्ञानचंदसा सावजी, देऊलगांवराजा

श्री संजय मगलचंद पहाड़े, औरंगाबाद

श्री अनमोल चन्दूलाल कासलीवाल, औरंगाबाद

श्री अमोल नवीनचन्द्र पाटनी, औरंगाबाद

श्री सचिन कल्यानमल काला, औरंगाबाद

श्री आशीष अजितचंद कासलीवाल, औरंगाबाद

श्री अनिल अशोक कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद

श्री योगेश माणिकचंद पांडे, औरंगाबाद

श्री विनीत कस्तूरचंद लोहाड़े, औरंगाबाद

श्री दीपक मदनलाल कासलीवाल, औरंगाबाद

श्री प्रतीक राजकुमार पांडे, औरंगाबाद

श्री संदीप राजकुमार पाटनी, औरंगाबाद

श्री सुनील कुमार मोहनलाल काला, चेन्नई

श्री दिलीप कुमार सुपुत्र श्री एस.सी.जैन, चेन्नई

श्री रोहित रुपेशकुमार जैन, चेन्नई

श्री अशोक कुमार सोहनलाल जैन (गंगवाल), सूरत

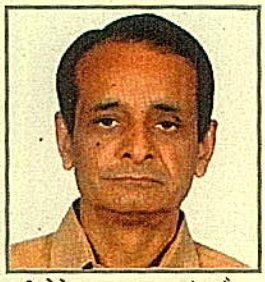
श्री देवेन्द्र कुमार मूलचंद्र जैन, बड़ौदा

श्री सोमिल दिनेशकुमार जैन, जबलपुर

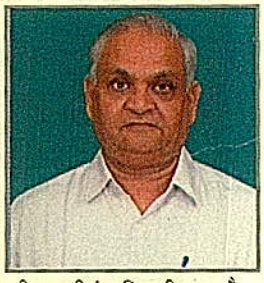
श्री हुकमीचंद मिशारीलाल जैन, पांडिचेरी

श्री जयेन्द्र हँसमुखलाल जैन, वडोदरा

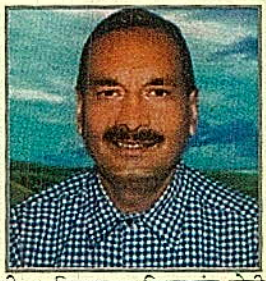
श्री अरविन्दकुमार शिखरचंद मोदी, खुरई

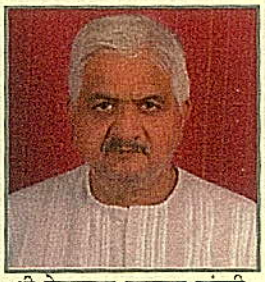
श्री तेजकुमार मूलचन्द झांझरी, ओंढा (नागनाथ)

श्री सुकुमार अंबादास कंदी, शिरडशहापुर

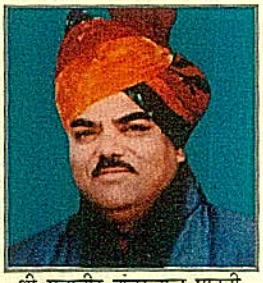
श्री महावीर झुंबरलाल पाटनी, औरंगाबाद

ब्र. वैशाली दीदी, मालसाने (नाशिक)

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

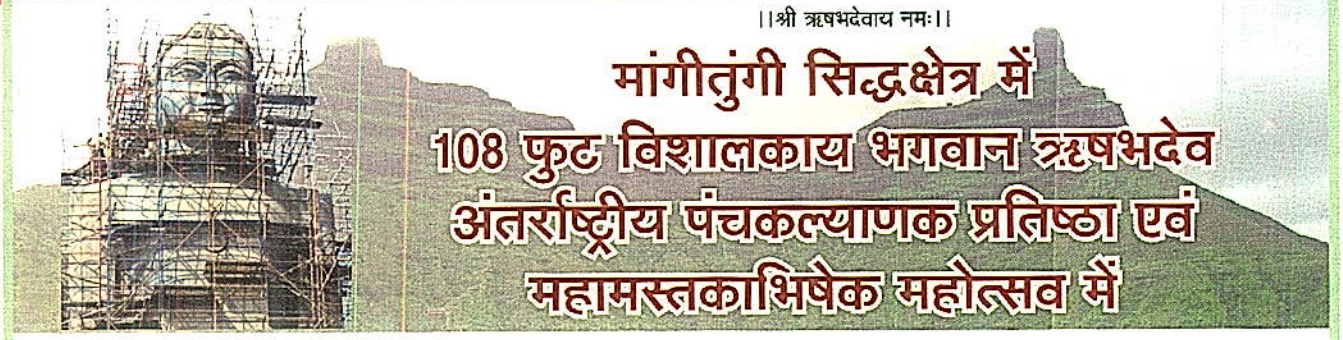

।।श्री ऋषभदेवाय नमः।।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में 108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव में

स्वर्णिम इतिहास का प्रथम सूत्रपात

किसको प्राप्त होंगे पंचमकाल के प्रथम ऐतिहासिक सौभाग्य

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 11 फरवरी से 17 फरवरी 2016

मस्तकाभिषेक 18 फरवरी 2016 से प्रारंभ

कौन करेगा विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा पर प्रथम कलश ?

कौन बनेगा महायज्ञनायक, धनकुबेर, ईशान व सानत्कुमार इन्द्र ?

कौन बनेंगे महोत्सव के अन्य प्रमुख पात्र ?

ऐसे बहुमूल्य गौरवशाली अवसर हेतु शीघ्र संपर्क करें।

-मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत एवं महोत्सव सान्निध्य-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

मेरी अंतरंग भावना

"इस स्वर्णिम अवसर से दिगम्बर जैन समाज का एक भी बच्चा वंचित नहीं रहना चाहिए, ऐसी मेरी अंतरंग भावना है।

अतः हमारी समाज का प्रत्येक परिवार इन भावनाओं को अवश्य ही पूरा करते हुए अपनी सुविधानुसार किसी भी राशि का एक कलश अवश्य आरक्षित करेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।"

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी
(अध्यक्ष एवं कुशल नेतृत्व)

-मार्गदर्शन-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

पंचकल्याणक महोत्सव में इन्द्र-इन्द्राणी बनने वाले एवं कलश आरक्षण करने वाले समस्त महानुभावों के आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था समिति की ओर से रहेगी, जिसकी विस्तृत जानकारी www.highestjainidolinworld.com से प्राप्त कर सकते हैं।

इन्द्र-इन्द्राणी हेतु न्यौछावर राशि

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर आदि मुख्य इन्द्र
5,51,000/-रु. प्रत्येक

इन्द्र-इन्द्राणी प्रथम श्रेणी
1,00,000/-रु.प्रत्येक

इन्द्र-इन्द्राणी द्वितीय श्रेणी
51,000/-रु. प्रत्येक

महामस्तकाभिषेक कलशों की न्यौछावर राशि

कलश	न्यौछावर राशि	सदस्य संख्या
1. महादिव्य कलश	5,00,000/-रु.	11
2. दिव्य कलश	2,51,000/-रु.	9
3. रत्न कलश	1,00,000/-रु.	7
4. स्वर्ण कलश	51,000/-रु.	5
5. रजत कलश	25,000/-रु.	4
6. भक्ति कलश	11,000/-रु.	3
7. श्रद्धा कलश	5,100/-रु.	2

न्यौछावर राशि जमा करने हेतु-
खाते का नाम
B.R.P.P.M. Samiti Mangitungi
बैंक-P.N.B., A/c No.
3704002100007589
(IFSC Code-PUNB0370400)
शाखा-हस्तिनापुर
बैंक-S.B.I., A/c No.
34736237114
(IFSC Code-SBIN0002353)
शाखा-हस्तिनापुर
नोट - राशि जमा करने के उपरांत निम्न नम्बर पर पूर्ण जानकारी अवश्य देवें।

पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन एवं महोत्सव की समस्त जानकारी हेतु प्रतिदिन देखें

पारस — प्रतिदिन रात्रि 9 बजे एवं प्रातः 6 बजे

जिनवाणी JINVANI — प्रतिदिन मध्यान्ह 3.30 बजे

मंगल कलश — प्रतिदिन मध्यान्ह 4 बजे

निवेदक-108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, पो.-मांगीतुंगी (नासिक) महा.

संपर्क हेतु फोन नं.-मो.-09411025124, 09717331008, 09457817324, 09403688133, 02555-286523 (कार्यालय-मांगीतुंगी)
Website : www.highestjainidolinworld.com E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

।। हार्दिक आमंत्रण ।।

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड, डबोक, उदयपुर- २४

श्री रत्नत्रय विधान

शुक्रवार, दि. २२ अप्रैल २०१६

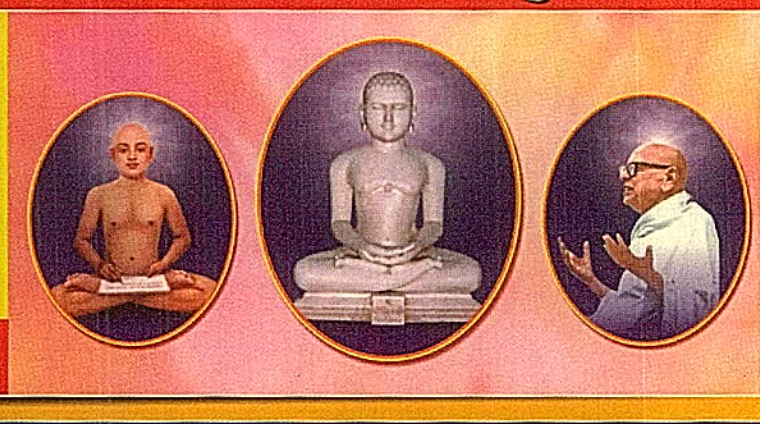

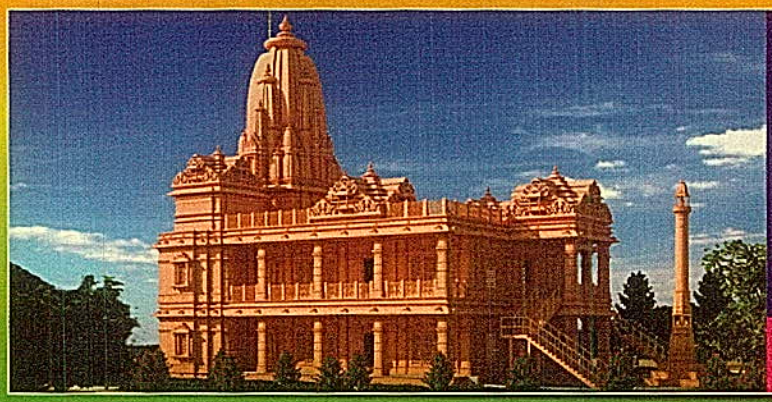

श्री सीमंधर जिनालय वेदी शिलान्यास महोत्सव

शनिवार, दि. २३ अप्रैल २०१६

अतिथि निवास कन्या छात्रावास भवन उद्घाटन समारोह

रविवार, दि. २४ अप्रैल २०१६

जैन बालिका संस्कार संस्थान | जैन दर्शन कन्या महाविद्यालय उदयपुर

सम्पर्क सूत्र : 97235 50590, 97235 50592, 94141 03492

Email: info@shashwatdham.com • www.shashwatdham.com